Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 41

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

7 रबीय्युल अव्वल 1442 हिज्री कमरी 14 इख़ा 1400 हिज्री शम्सी 14 अक्तूबर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

सवाल से बचने का आदेश

(1469) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि अंसार में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दिया। फिर उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दिया। फिर उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दिया यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जो था वह ख़त्म हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो माल भी मेरे पास होगा, मैं उसको तुमसे कदापि छिपा कर नहीं रखूँगा और जो सवाल से बचेगा तो अल्लाह तआला भी उसे बचाए गा और जो (दुनिया के माल से) बेनयाज़ होना चाहेगा अल्लाह तआला भी उसे बेनयाज़ कर देगा और जो अपने नफ़्स पर-ज़ोर डाल कर सब्र करेगा अल्लाह तआला भी उस को सब्र देगा और सब्र से बढ़कर वसीअ और बेहतर किसी को भी कोई नेअमत नहीं दी गई।

(1470) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसी की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है यह बेहतर है कि तुम में से कोई अपनी रस्सी ले और अपनी पीठ पर लकड़ियाँ उठा लाए ब-निसबत इसके कि वह किसी व्यक्ति के पास आए और उस से मांगे । वह उसे दे या न दे।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

अंबिया अलैहिमुस्सलाम हर प्रकार के सुधार के लिए आते हैं। अत: यदि वह बीवी बच्चे न रखते हों, तो इस पक्ष में सम्पूर्ण सुधार कैसे होता।

दुनिया और इस की चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर कोई प्रभाव नहीं डालती वह नश्वर आन्नदों को कोई परवाह नहीं करते।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क्या कारण है कि अंबिया बीवियां और बच्चे भी रखते हैं?

कुछ अज्ञान लोगों को यह शंका होती है कि जब कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ऐसे अल्लाह तआला में लीन होते हैं और दुनिया और इस के आन्नदों से दूर भागते हैं,फिर इस का क्या कारण है कि वे बीवियां और बच्चे भी रखते हैं? ये लोग इतना नहीं समझते कि एक शख़्स तो इन बातों का ग़ुलाम और उन नश्वर लज़्ज़तों में लीन हो जाता है परन्तु यह गिरोह इन बातों से पवित्र होता है। ये चीज़ें उन के लिए केवल सेवक के तौर पर होती हैं ओर इस के इलावा अंबिया अलैहिमुस्सलाम हर प्रकार के सुधार के लिए आते हैं। अत: यदि वह बीवी बच्चे न रखते हों, तो इस पक्ष में सम्पूर्ण सुधार कैसे होता। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ईसाई लोग व्यवहार के बारे में मसीह का क्या नमूना पेश कर सकते हैं? कुछ भी नहीं। जब वे इस मार्ग से अपरिचित हैं और उन मदारिज से अज्ञान हैं वे क्या सुधार करेंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही कमाल है कि हर पहलू में आपका नमूना कामिल है। दुनिया और इस की चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सालम पर कोई प्रभाव नहीं डालती हैं वे फ़ानी लज़्ज़तों की कुछ भी परवाह नहीं करते,बल्कि उनका दिल ख़ुदा तआला की तरफ़ दरिया की एक तेज़ धारी की तरह जो पहाड़ से गिरती है बहता है और इस के धार में सब घास पत्ते बह जाते है।

अत: अंबिया अलैहिमुस्सलाम इन चीज़ों के ग़ुलाम नहीं होते, बल्कि ये चीज़ें उन के लिए सेवक के रूप में होती हैं और उनके उच्च स्तर के आचरण की सम्पूर्णता का नमूना उनके इस ज़िक्र और ज़ौक़ में जो ख़ुदा तआला की कल्पना और लीनता में उन्हें मिलता है उनसे कुछ रोक पैदा नहीं होता। वे कुछ ऐसे लून और फ़ना होते हैं कि दुनिया से बिल्कुल अलग होते हैं। जब इस प्रकार की रबूदगी होती है तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ से आवाज़ें आने लगती हैं और वार्तालाप होते हैं। यह नियम की बात है कि जो

शेष पृष्ठ 16 पर

अब केवल क़ुरआन-ए-करीम ही को यह हिफ़ाज़त हासिल है कि उसके मानने वाले हर ज़माना में ख़ुदा तआला से सीधे इल्हाम पाने के मुद्दई होते चले आए हैं

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मेरा दावा है कि किसी इलम का अनुपालन करने वाला चाहे क़ुरआन-ए-करीम के किसी मसला पर हमला करे

मैं इस का उचित और उत्तर जवाब दे सकता हूँ और अल्लाह तआलाके फ़ज़ल से प्रत्येक ज्ञानी को निरुत्तर कर सकता हूँ

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत हिजर आयत10 اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

एक बहुत बड़ा माध्यम क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का यह भी हुआ कि नुज़ूल क़ुरआन के बाद इलमी अरबी भाषा की तबदीली बंद हो गई। अरबी के सिवा दुनिया में कोई ऐसी भाषा नहीं पाई जाती जो आज भी वही हो जिस तरह तेराह सौ वर्ष पहले थी। चासर और शेक्सपियर की तीन सौ वर्ष पूर्व की अंग्रेज़ी की व्याख्या करने की ज़रूरत है क्योंकि बहुत बदल चुकी है परन्तु क़ुरआन-ए-मजीद के समझने के लिए पुराने शब्दकोशों की ज़रूरत नहीं क्योंकि जो व्यक्ति इलमी अरबी आज पढ़ता है वह क़ुरआन-ए-करीम को भी बग़ैर किसी की मदद के समझ सकता है।

इन ज़ाहिरी सामानों के अतिरिक्त अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का एक ऐसा माध्यम भी निर्धारति किया जिसमें फ़रिश्तों का भी दख़ल नहीं और वे इल्हाम है। इल्हाम में फ़रिश्ते कभी कबार केवल

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 8)

क्या इस्लाम युद्ध में दुश्मन की महिलाों के साथ विवाह के पश्चात् वाले संबंधों को क़ायम करने और उनको बेचने की आज्ञा देता है।?

प्रश्न एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की सेवा में लिखा कि मुझे यह मालूम कर के अत्यधिक धक्का लगा कि इस्लाम युद्ध में दुश्मन की महिलों के साथ विवाह के पश्चात् वाले संबंधो को क़ायम करने और उनको बेचने की आज्ञा देता है। यह बात मेरे लिए बहुत निराशाजनक थी। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के बाद मुझे आशा थी कि आप इस बात का खण्डन फ़रमाएँगे और इस्लाम को इस विचारधारा से पवित्र क़रार देंगे लेकिन मैंने ऐसा नहीं पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने तिथि 3 मार्च 2018 ई. में इस प्रश्न का निहायत विवेक पूर्ण उत्तम उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : असल बात यह है कि इस मसला की अच्छी तरह वज़ाहत न होने का कारण से कई ग़लत-फ़हमियाँ पैदा हो जाती हैं और उन ग़लत-फ़हमियों का खण्डन हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी लेखनी में फ़रमाया है और आपके समय के खलिफ़ा भी अवसर के अनुसार समय समय पर इस का खण्डन करते रहे और असल शिक्षा वर्णन फ़रमाते रहे हैं।

पहली बात यह है कि इस्लाम युद्ध में दुश्मन की महिलों के साथ केवल इस वजह से कि वे युद्ध में हैं नितांत आज्ञा नहीं देता कि जो भी दुश्मन है उनकी महिलों को पकड़ लाओ और अपनी लौंडियां बना लो।

इस्लाम की शिक्षा यह है कि जब तक ख़ून बहाने वाली जंग न हो तब तक किसी को क़ैदी नहीं बनाया जा सकता। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ(अल् अंफाल : 68)किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में ख़ून बहाने वाली जंग किए बग़ैर क़ैदी बनाए। तुम सांसारिक वस्तुएं चाहते हो जबकि अल्लाह आख़िरत पसंद करता है और अल्लाह पूर्ण ग़लबा वाला (और) बहुत हिक्मत वाला है।

अत: जब ख़ून बहाने वाली जंग की शर्त लगा दी तो फिर मैदान-ए-जंग में केवल वही महिलाएं क़ैदी के तौर पर पकड़ी जाती थीं जो युद्ध के लिए वहां मौजूद होती थीं। इसलिए वे केवल् महिलाएं नहीं होती थीं बल्कि युद्ध में दुश्मन के तौर पर वहां आई होती थीं।

अतिरिक्त इसके जब इस वक़्त के जंगी कानून और इस ज़माना के रिवाज को देखा जाए तो पता चलता है कि उस ज़माना में जब जंग होती थी तो दोनों फ़रीक़ एक दूसरे के लोग को चाहे वे महिलाएं हैं या बच्चे या महिलाएं क़ैदी के तौर पर ग़ुलाम और लौंडी बना लेते थे। इसलिए وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا (अल् शूरा : 41) के अधीन उनके अपने ही कानून के अंतर्गत जो कि गिरोहों को स्वीकार होते थे, मुस्लमानों का ऐसा करना कोई आपति के योग्य कार्य नहीं ठहरता। विशेषता जब उसे इस ज़माना, माहौल और इलाक़ा के कानून के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए। इस ज़माना में युद्ध में गिरोहों उस वक़्त के परचलित क़वायद और दस्तूर के अनुसार ही जंग कर रहे होते थे। और जंग के समस्त क़वायद गिरोहों पर मुकम्मल तौर पर चस्पाँ होते थे, जिस पर दूसरे फ़रीक़ को कोई आपत्ति नहीं होती थी। यह विषय आपत्ति के योग्य तब होते जब मुस्लमान इन प्रचलति क़वायद को बदल कर ऐसा करते।

इसके बावजूद क़ुरआन-ए-करीम ने एक उसूली शिक्षा के साथ इन समस्त जंगी क़वायद को भी बांध दिया। फ़रमाया فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ (अल् बक़रा : 195) अर्थात जो तुम पर ज़्यादती करे तो तुम भी इस पर वैसी ही ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर की हो।

फिर फ़रमाया فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (अल् मायदा : 95) अर्थात जो इसके बाद हद से तजावुज़ करेगा उसके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

यह वह उसूली शिक्षा है जो पूर्व के समस्त धर्मों की शिक्षाओं पर भी इमतियाज़ी फ़ज़ीलत रखता है। बाइबल और अन्य धर्मों की पवित्र पुस्तकों में मौजूद जंगी शिक्षाओं का अध्यन किया जाए तो उनमें दुश्मन को तहस नहस करके रख देने की शिक्षा मिलती है। पुरुष और महिलाएं तो एक तरफ़ रहे उनके बच्चों, जानवरों और घरों तक को लूट लेने, जला देने और ख़त्म कर देने के आदेशों उनमें मिलते हैं। लेकिन क़ुरआन-ए-करीम ने इन हालात में भी जबकि गिरोहों को अपनी भावनाओं पर कोई क़ाबू नहीं रहता और दोनों एक दूसरे को मारने के दर पर होते हैं और भावनाएं इतनी भड़की होती हैं कि मारने के बाद भी भावनाएं ठंडी नहीं पड़ती और दुश्मन की लाशों को कुचल करके ग़ुस्सा ठंडा किया जाता है, ऐसी शिक्षा दी कि इसलिए मुँह ज़ोर घोड़ों को लगाम डाली और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस पर ऐसा सुन्दर अमल करके दिखाया कि तारीख़ ऐसे सैंकड़ों गर्व करने वाली घटनाओ से भरी पड़ी है।

इस ज़माना में कुफ़्फ़ार मुस्लमान महिलों को क़ैदी बना लेते और उनसे बहुत ही बुरा व्यवहार करते। क़ैदी तो अलग रहे वे तो मुस्लमान कत्ल हुए की नाशों के अंग काटा करते, उनके नाक कान काट देते थे। हिन्दा का हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का कलेजा चबाना कौन भूल सकता है। लेकिन ऐसे अवसर पर भी मुस्लमानों को यह शिक्षा दी गई कि अनेक प्रकार से कि वे मैदान-ए-जंग में हैं लेकिन फिर भी किसी महिला और किसी बच्चे पर तलवार नहीं उठानी और शारीरिक अंग काटने से मना फ़र्मा कर दुश्मनों की लाशों की भी पवित्रता क़ायम फ़रमाई।

जहां तक लौंडियों का मसला है तो इस बारे में इस कार्य को हमेशा पेश-ए-नज़र रखना चाहिए कि इस्लाम के आरंभिक ज़माना में जबकि दुश्मन इस्लाम मुस्लमानों को तरह तरह के ज़ुल्मों का निशाना बनाते थे और यदि किसी ग़रीब मज़लूम (पीड़ित) मुस्लमान की महिला उनके हाथ आ जाती तो वे उसे लौंडी के तौर पर अपनी महिलों में दाख़िल कर लेते थे। इस लिए جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا की क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार ऐसी महिलाएं जो इस्लाम पर हमला करने वाले लश्कर के साथ उनकी सहायता के लिए आती थीं और उस ज़माना के रिवाज के अनुसार जंग में बतौर लौंडी के क़ैद कर ली जाती थीं। और फिर दुश्मन की ये महिलाएं जब फिरौती की रकम की अदायगी या आपसी पत्राचार के तरीक़ को इख़तियार कर के आज़ादी भी हासिल नहीं करती थीं तो ऐसी महिलों से निकाह के बाद ही शारीरिक सम्बन्ध क़ायम हो सकते थे। लेकिन इस निकाह के लिए उस लौंडी की रजामंदी आवश्यक नहीं होती थी। इसी तरह ऐसी लौंडी से निकाह के परिणाम में मर्द के लिए चार शादियों तक की आज्ञा पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था अर्थात एक मर्द चार शादियों के बाद भी ऊपर वर्णित किस्म की लौंडी से निकाह कर सकता था। लेकिन यदि इस लौंडी के हाँ बच्चा पैदा हो जाता था तो वह बच्चे की माँ होने के कारण आज़ाद हो जाती थी।

अतिरिक्त इसके इस्लाम ने लौंडियों से हुस्न-ए-सुलूक करने, उनकी शिक्षा-ओ-तर्बीयत का इंतिज़ाम करने और उन्हें आज़ाद कर देने को सवाब का कारण बता दिया। इस लिए हज़रत अबू मूसा अशअरी से रिवायत है :

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ أَيُّمَا رَجُلٍ كَانَتْ لَهُ جَارِيَةٌ فَأَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا وَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا فَلَهُ أَجْرَانِ۔

(صحیح بخاری، کتاب العتق بَابُ العَبْدِ إِذَا أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ وَنَصَحَ سَيِّدَهُ)

अर्थात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस व्यक्ति के पास लौंडी हो और वह उसे निहायत अच्छे आदाब सिखाए और फिर उसे आज़ाद करके उससे शादी कर ले तो इस को दोहरा सवाब मिलेगा।

शेष पृष्ठ 16 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह अपना आदेश नाफ़िज़ करने वाला है और अपने वादे को पूरा करने वाला है और एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम को नमूदार करेगा ..... तुम अपनी हालत में कोई तब्दीलिया और बदलाव न करना

अन्यथा अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अतिरिक्त लोगों से बदल देगा ..... मुझे उस वक़्त उम्मत मुस्लिमा की तबाही और बर्बादी का केवल तुम्ही से अंदेशा है

(हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हो)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारूक़-ए-आज़म हज़रत उमर बिन ख़िताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

चीन के शहनशाह ने मुस्लमानों के हालात और वाक़ियात सुनने के बाद यज़्दजर्रद को लिखा कि तुम्हारे क़ासिद ने मुस्लमानों की जो विशेषताएं वर्णन की हैं मेरे ख़्याल में यदि वह पहाड़ से भी टकरा जाएं तो उसे टुकड़े टुकड़े कर दें

हमारा मामला हमेशा बाम-ए-उरूज पर रहेगा और हम समस्त मसाइब से महफ़ूज़ रहेंगे जब तक कि हम चोरी और ख़ियानत न करें

जब हम माल-ए-ग़नीमत में ख़ियानत करने लगेंगे तो ये नापसंदीदा बातें हमारे अंदर नज़र आयेंगी, ये बुरे काम हमारी अक्सरियत को ले डूबेंगे

(हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो)

जंग रै, फ़तह कूमीस, आज़रबाइजान, ख़ुरासान, इस्तख़र, फ़ासा और दार-ए-अबजरद, किरामान, सजिसतान, मकरान और आरमानिया की संधि का वर्णन

टर्किश इंटरनैट रडियो के इफ़्तिताह का ऐलान

चार मरहूमीन आदरणीय मुहम्मद अलमुख़्तार किबता साहिब आफ़ मराक़श, आदरणीय महमूद अहमद साहिब साबिक़ ख़ादिम मस्जिद अक्सा और मस्जिद मुबारक क़ादियान,

आदरणीया सौदा साहिबा पत्नी अब्दुर्रहमान साहिब आफ़ केराला इंडिया और आदरणीया सईदा मजीद साहिबा पत्नी शेख़ अब्दुल मजीद साहिब आफ़ फ़ैसलाबाद की विशेषताओं और गुणों का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 अगस्त 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के वाक़ियात का वर्णन चल रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में एक जंग हुई जिसे जंग रै कहते हैं। रै एक प्रसिद्ध शहर है जो पहाड़ों की सरज़मीन है। यह नीशापुर से 480 मील की दूरी पर और कज़वीन से 51मील की दूरी पर है। रै के रहने वाले को राज़ी कहते हैं। प्रसिद्ध मुफ़स्सिर-ए-क़ुरआन हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमहुल्लाह रै के रहने वाले थे। रै का हाकिम सीयावख्श बिन मेहरान बिन बहराम शूबीन था। उसने दुम्बावद, तबारिस्तानतान, कूमिस और जुर्जान वालों को अपनी सहायता के लिए बुलाया और उनको कहा कि मुस्लमान रै पर हमला-आवर हैं। तुम उनके मुक़ाबले के लिए जमा हो जाओ अन्यथा फिर अलग अलग तुम उनके सामने कभी नहीं ठहर सकोगे। इसलिए इन क्षेत्रों की सहायता के लिए फ़ौजे भी रै में जमा हो गईं। अभी ये मुस्लमान जो थे रै के रास्ते में ही थे कि एक ईरानी सरदार अबुल्फ़ख़ान ज़बीनी मित्र के रूप में मुस्लमानों से आ मिला जिसकी वजह ग़ालिबन यह थी कि इस की रै के हाकिम से लगती थी। लश्कर जब रै पहुंचा तो दुश्मन की संख्यां और इस्लामी लश्कर की संख्यां में कोई समानता नहीं थी। यह सूरत देखकर ज़यनबी ने नईम को कहा कि आप मेरे साथ कुछ शहसवार भेजिए में ख़ुफ़ीया रास्ते से शहर के अंदर जाता हूँ, आप बाहर से हमला-आवर हों और शहर फ़तह हो जाएगा। इसलिए रात के वक़्त नईम बिन मुक़र्रिन ने अपने भतीजे मुन्ज़िर बिन अम्र की सरकर्दगी में रसाले का कुछ हिस्सा ज़ेंबी के साथ भेज दिया और इधर बाहर से लश्कर लेकर ख़ुद शहर पर हमला-आवर हुए। जंग शुरू हो गई। दुश्मन ने बड़ी साबित क़दमी से हमले का उत्तर दिया परन्तु जब अपने पीछे से उन मुस्लमानों के नारों की आवाज़ सुनी जो ज़ेंबी के साथ शहर के अंदर दाख़िल हो गए थे तो हिम्मत हार दी और शहर पर मुस्लमानों का कब्ज़ा हो गया। शहर-वालों को लिखित अमान दे दी गई और जो अमान दी उस के शब्द इस तरह हैं। बिस्मिल्ला हिर्रहिमान निर्रहीम यह वह तहरीर है जो नईम बिन मुक़र्रिन, ज़ेंबी को देते हैं। वे रै के रहने वालों और बाहर के रहने वालों को जो उनके साथ हैं अमान देते हैं इस शर्त पर कि हर बालिग़ वर्ष में एक बार अपनी सामर्थ्य अनुसार जिज़्या (टैक्स) दे और यह कि वे ख़ैर ख़्वाही करे। रास्ता बताएं और ख़ियानत और धोखे बाज़ी न करें और एक दिन रात मुस्लमानों की महमान नवाज़ी करें और उनका सम्मान करें। जो मुस्लमानों को गाली देगा सज़ा पाएगा और जो उस पर हमला करेगा क़तल का दंड पाए गा। बहरहाल यह तहरीर हो कर गवाही डाली गई।

(मक़ाला तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब, पृष्ठ170से 172) (तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 537 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 511 भाग 3 पृष्ठ 132 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर कूमेस की विजय और जुर्यान है। यह बाईस हिज्री की हैं। रे की फ़तह की ख़ुशख़बरी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास क़ासिद लेकर पहुंचा तो आपने नईम बिन मकरन को लिखा कि अपने भाई सोवेद बिन मुक़र्रिन को कूमीस की फ़तह के लिए भेज दो। यह शहर रे और नीशापुर के मध्य त्बारिस्तान की पहाड़ी सिलसिला के अंतिम भाग पर वाक़्य था। कूमीस वालों ने कोई प्रतिरोध नहीं किया और सुवैद ने उन लोगों के लिए अमान और सुलह की तहरीर लिख दी। इसके साथ ही जुर्जान जो तबारिस्तान और ख़ुरासान के मध्य एक बड़ा शहर था और तबारिस्तान ने लोगों ने भी सुवैद की तरफ़ अपने लोग भेजे और उन्होंने भी जिज़्या (टैक्स) पर सुलह कर ली। सुवैद ने सब इलाक़े के लोगों के लिए अमान और सुलह की तहरीर लिख कर दे दी।

(सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़िताब अज़ सलाबी पृष्ठ 432 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

कोई मज़हब की बात नहीं हुई। जिन्होंने सुलह की उनके साथ सुलह कर ली गई। फिर आज़रबाइजान की विजय है। यह भी बाईस हिज्री की है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से आज़रबाइजान की मुहिम का झंडा उत्बा बिन फ़र्क़द और बुकेर बिन अब्दुल्लाह को दिया गया था जो पहले वर्णन हो चुका है। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिदायत की थी कि दोनों अलग अलग सिम्तों से हमला-आवर हूँ। बुकेर बिन अब्दुल्लाह लश्कर लेकर बढ़े और जर्मीज़ान के क़रीब रुस्तम का भाई इस्फंदयाज़ फ़र्रुख़ज़ाज़ जो वाजरूज़ के मार्का में शिकस्त खा कर भागा था मुक़ाबला के लिए निकला। यह बुकेर का आज़रबाइजान में पहला मार्का था। लड़ाई हुई। दुश्मन की शिकस्त हुई और इसफंदयाज़ गिरफ़्तार हो गया। इस्फंदयाज़ ने इस्लामी सालार बुकेर से पूछा कि आप सुलह पसंद करते हैं या जंग? बुकेर ने उत्तर दिया कि सुलह। वह बोला तो फिर आप मुझे अपने पास ही रखें। अपनी क़ैद में ले लिया है तो अपनी क़ैद में रखों। जब तक में उन लोगों का प्रतिनिधि बन कर आपसे सुलह न करूँगा ये लोग कभी संधि नहीं करेंगे। जंग लड़ते रहेंगे जबकि इर्द-गिर्द के पहाड़ों में मुंतशिर हो जाऐंगे या ये लोग क़िलों में

महसूर हो जाऐंगे। बुकेर ने इस्फ़ंदयाज़ को अपने पास ही रखा। आहिस्ता-आहिस्ता और इलाक़ा उनके ज़ेर इक़्तिदार आता चला गया। उत्बा बिन फ़रकद ने दूसरी जानिब से हमला किया। असफ़ंदयाज़ का भाई बहराम उनके रास्ते में रुकावट बना परन्तु लड़ाई के बाद शिकस्त खा कर भाग गया। अस्फ़ंदयाज़ ने जब यह ख़बर सुनी तो कहने लगा कि अब लड़ाई की आग बुझ गई और सुलह का वक़्त आ गया। इसलिए उसने सुलह कर ली और आज़रबाइजान के लोगों ने उस का साथ दिया और यह सुलह नामा लिखा गया। इस के शब्द यह थे जो बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम से शुरू होता है। यह तहरीर है जो अमीरुल मोमनीन उमर बिन ख़िताब के आमिल उत्बा बिन फ़रकद आज़रबाइजान के लोगों को देते हैं। आज़रबाइजान के मैदानी इलाक़े और पहाड़ी इलाक़े और सरहदी और किनारों के इलाक़े के रहने वालों और समस्त धर्मों वालों के लिए यह तहरीर है। इन सबको अमान है अपनी जानों के लिए, अपने धन के लिए, अपने मज़ाहिब के लिए, अपनी शरियतों के लिए इस शर्त पर कि वे जिज़्या (टैक्स) अदा करें अपनी ताक़त के अनुसार। जो भी उनकी ताक़त है इस के अनुसार जिज़्या अदा करें। लेकिन जिज़्या न बच्चे पर होगा न महिला पर, न लंबे बीमार पर जो एक मुस्तक़िल बीमार है जिसके पास माल नहीं, न उस आबिद गोशा नशीन पर जिसके पास कुछ माल नहीं और यह यहां के लोगों के लिए भी है और उनके लिए भी जो बाहर से आकर उनके साथ आबाद हो जाएं। भविष्य में आने वालों और वहां आबाद होने वालों के लिए भी है। उनके ज़िम्मा इस्लामी लश्कर की एक दिन रात मेहमान-नवाज़ी है और उस को रास्ता बताना है। यदि किसी से कोई फ़ौजी ख़िदमत ली जाएगी तो इस से जिज़्या माफ़ कर दिया जाएगा। जो यहां क़ियाम करे उस के लिए ये शर्तें हैं और जो यहां से बाहर जाना चाहे वह अमन में है यहाँ तक कि अपने अमन के स्थान पर चला जाए। यह तहरीर जुन्दुब ने लिखी और इस के गवाह हैं बुकेर बिन अब्दुल्लाह और सिमाक़ बिन ख़रशह।

(मक़ाला तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब, पृष्ठ 176 से 179) (तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 539-540 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

आरमीनिया की संधि के बारे में लिखा है कि आज़रबाइजान की फ़तह के बाद बुकेर बिन अब्दुल्लाह आरमीनिया की तरफ़ बढ़े। उनकी सहायता के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लश्कर सुराका बिन मालिक बन अम्र की सरकर्दगी में भिजवाया और इस मुहिम में सिपहसालार आला भी सुराका को निर्धारित किया और हर प्रथम दस्तों की कमान अब्दुर्रहमान बिन रबी को दी। एक बाज़ू का अफ़सर हुज़यफ़ह बिन उसेद गीफ़ारी को बनाया और यह आदेश दिया कि जब यह लश्कर बुकेर बिन अब्दुल्लाह के लश्कर से जो आरमीनिया की तरफ़ रवाना था जा मिले तो दूसरे बाज़ू की कमान बुकेर बिन अब्दुल्लाह के सपुर्द की जाए। यह लश्कर रवाना हुआ और हर प्रथम दस्ते के अफ़्सर अब्दुर्रहमान बिन रबीया तेज़ी से नक़ल-ओ-हरकत करते हुए बुकेर बिन अब्दुल्लाह के लश्कर से आगे निकल कर बाब स्थान के क़रीब जा पहुंचे जहां शहरा ब्राज़ हाकिम आर्मीनिया मुक़ीम था। यह व्यक्ति ईरानी था। उसने ख़त लिख कर अब्दुर्रहमान से अमान हासिल की और अब्दुर्रहमान की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह ईरानी था और और अर्मानियों से नफ़रत करता था। उसने अब्दुर्रहमान के पास सुलह की पेशकश की और कहा कि मुझसे जिज़्या न लिया जाए। मैं हस्ब-ए-ज़रूरत फ़ौजी सहायता दिया करूँगा। यहां यह एक प्रकार का समझोता हो रहा है। ख़ुद आ गया है। सुलह कर ली तो जिज़्या नहीं लिया जाए। मैं मदद करता हूँ, फ़ौजी मदद करूँगा। सुराक़ा ने यह तजवीज़ मंज़ूर कर ली और बग़ैर जंग के आरमीनिया पर कब्ज़ा हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में जब इस किस्म की सुलह की रिपोर्ट की गई तो न केवल यह कि आपने उसे मंज़ूर कर लिया बल्कि बड़ी मुसर्रत और पसंदीदगी का इज़हार फ़रमाया। हज़रत सुराका ने जो तहरीर सुलह की दी वह यह थी कि बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। यह वह तहरीर है जो अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़िताब के गवर्नर सुराक़ा बिन अम्र ने शहरे बराज़ और आरमीनिया और अर्मन के लोगों को दी है वह उन्हें अमान देते हैं उनकी जानों पर, अम्वाल पर और मज़हब पर कि उन्हें कोई नुक़्सान न पहुंचाया जाए। वह हमले की सूरत में फ़ौजी ख़िदमत सरअंजाम देंगे और हर अहम काम में जब हाकिम मुनासिब समझे मदद देंगे और जिज़्या उन पर नहीं लगाया जाएगा बल्कि फ़ौजी ख़िदमत जिज़्या के बदले में होगी। परन्तु जो फ़ौजी ख़िदमत न दें उन पर आज़रबाइजान के लोग की तरह जिज़्या है और रास्ता बताना है और पूरे एक दिन की महमान नवाज़ी है लेकिन यदि उनसे फ़ौजी ख़िदमत ली जाएगी तो जिज़्या नहीं लिया जाएगा। यदि फ़ौजी ख़िदमत न ली जाएगी तो जिज़्या लगाया जाएगा। फिर उसके भी गवाह हैं अब्दुर्रहमान बिन रबीया और सल्मान् बिन रबीया, बुकेर बिन अब्दुल्लाह। यह तहरीर जो है मर्ज़ी बिन मुक़र्रिन ने लिखी और ये भी गवाह हैं।

इस के बाद सुराक़ा ने आरमीनिया के इर्द-गिर्द के पहाड़ों की तरफ़ फ़ौजे भेजनी शुरू कीं। इसलिए बकीर बिन अब्दुल्लाह, हबीब बिन मसलमा, हुज़ैफ़ा बिन उसेद और सलमान बिन राबिया की सरकर्दगी में उन पहाड़ों की तरफ़ फ़ौजे रवाना हुईं। बकीर बिन अब्दुल्लाह को मूकान भेजा गया। हबीब को तफ़लीस की तरफ़ रवाना किया और हुज़ैफ़ा बिन उसेद को लान के पहाड़ों में रहने वालों के मुक़ाबले के लिए भेजा। सुराक़ा की इन फ़ौजे में नुमायां कामयाबी बुकेर बिन अब्दुल्लाह को हुई। उन्हें मुकान भेजा गया था। उन्होंने मूकान के लोगों को अमन की तहरीर दे दी और यह तहरीर यूं थी जो बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम से शुरू होती है। यह वह तहरीर है जो बकीर बिन अब्दुल्लाह ने क़ुबह के पहाड़ों में अहल-ए-मूकान को दी है। उनको अमान है उनकी जानों पर, उनके मालों पर, उनके मज़हब पर, उनकी शरियतों पर इस शर्त पर कि वह जिज़्या दें जो हर बालिग़ पर एक दीनार या उस की क़ीमत है। हर जगह ये जो समझोते हो रहे हैं वहां मज़हब पर आज़ादी है, शरीयत की आज़ादी है। जो इल्ज़ाम लगाया जाता है कि इस्लाम ने मज़हब तलवार से फैलाया, किसी को नहीं कहा गया कि ज़बरदस्ती इस्लाम लाओ। और भलाई करने वाले और मुस्लमानों को रास्ता दिखाएँ और एक दिन रात की महमान नवाज़ी करें। उनके लिए अमान होगी जब तक वह इस अह्द नामे पर क़ायम रहें और ख़ैर-ख़्वाह रहें और हमारे ज़िम्मा उनसे वफ़ादारी है। وَاللّٰہُ الْمُسْتَعَانُ। अल्लाह मददगार है लेकिन यदि वे इस अह्द को तौड़ दें और कोई छल उनसे सरज़द हो तो उनकी अमान बाक़ी नहीं होगी परन्तु यह कि वे धोखा करने वालों को हुकूमत के सपुर्द कर दें अन्यथा वे भी उनके शरीक समझे जाऐंगे। इस के भी गवाह निर्धारित थे। चार पाँच गवाहों ने हस्ताक्षर किए।

(मक़ाला तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 180 से 184)

फिर फ़तह ख़ुरासान है जो बाईस हिज्री में हुई। इस की तफ़सील यूं है कि जंग जलूला के बाद बादशाह् ईरान यज़्दज्रर्द रै पहुंचा। वहां के हाकिम आबान जज्विया ने यज़्दज्रर्द पर हमला कर दिया और यज़्दज्रर्द की मौहर पर कब्ज़ा कर के अपनी मर्ज़ी की दस्तावेज़ तैयार कर लें और फिर वह अँगूठी उसे वापस कर दी। फिर आबान हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया और वह समस्त चीज़ें वापस कर दें जो तहरीरी तौर पर लिखी हुई थीं। अर्थात जो दस्तावेज़ तैयार की गई थीं वे उन्हें दे दें। यज़्दज्रर्द रै से इस्फ़िहान की तरफ़ रवाना हुआ। आबान को यज़्दज्रर्द का वहां क़ियाम पसंद नहीं आया। इसलिए यज़्दज्रर्द को कर्मान की तरफ़ रवाना होना पड़ा। मुक़द्दस आग उस के साथ थी। ये लोग आग परस्त थे तो आग को साथ लिए फिरते थे। जो उनकी मुक़द्दस आग थी वे उस के साथ थी। फिर उसने ख़ुरासान का इरादा किया और मरू में आकर मुक़ीम हो गया। मुक़द्दस आग को वहां रोशन कर दिया और उसके लिए आतिश कदा बनवाई और बाग़ लगवाया जो मरू से दो फ़र्सख़ अर्थात छ: मील की दूरी पर था। यहां आकर वह अमन-ओ-अमान से रहने लगा। ग़ैर मफ़्तूहा क्षेत्रों के अहल अजम से ख़त-ओ-किताबत की और राह-ओ-रस्म बढ़ाने लगा यहां तक कि वे सब उसके आज्ञाकारी और फ़रमांबर्दार हो गए। तथा उसने मफ़्तूहा क्षेत्रों के अहल-ए-फ़ारिस को और हुर को भी भड़काया। इसलिए इस भड़काने के नतीजा में उन्होंने मुस्लमानों से अपने वफ़ा के बंधन तोड़ डाले और बग़ावत कर दी। तथा अहल-ए-जिबाल और अहल-ए-फिरोज़ान ने भी उनकी देखा देखी समझोते तोड़ दिए और बग़ावत कर दी। जिबाल जो है यह इराक़ में एक मारूफ़ इलाक़े का नाम है जो असबहान से लेकर ज़िन्जान, कज़वीन, हमाज़ान, रै इत्यादि शहरों पर मुश्तमिल है। फ़ीरूज़ान असबहान की एक बस्ती का नाम है। बहरहाल इन वजूहात की बिना पर अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को इजाज़त दे दी कि वे ईरान के क्षेत्रों में पेशक़दमी कर के इस के अंदर घुस जाएं। इसलिए कूफ़ा वाले और बस्रा वाले रवाना हुए और उन्होंने उनकी सरज़मीन पर पहुंच कर ज़बरदस्त हमले शुरू कर दिए। अहनफ़ बिन क़ैस ख़ुरासान की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में उन्होंने महर्ज़ान कज़क पर कब्ज़ा कर लिया। महर्ज़ान कज़क जो है ये हुल्वान से लेकर हमाज़ान तक पहाड़ों के मध्य का एक बड़ा इलाक़ा है जो कई शहरों और बस्तियों पर मुश्तमिल था। फिर मज़ीद आगे बढ़ते हुए उस की तरफ़

रवाना हुए तो उस वक़्त कूफ़ा वालों "हज्जी" का मुहासरा किए हुए थे। हज्जी भी असबहान के नवाह में एक क़दीम शहर का नाम था जो आजकल तक़रीबन वीराने में है। अजम में इस को शहरस्तान कहा जाता है। इसलिए वह तबसान के रास्ते ख़ुरासान में दाख़िल हुए और हरात पर तलवार की ताकत से कब्ज़ा कर लिया। तबासान एक नवाही क़स्बा है जो नीशापूर और इस के मध्य वाक़्य है। फ़ारस में उसे मुफ़रद के तौर पर तबस् पढ़ते हैं। हरात, ख़ुरासान के प्रसिद्ध शहरों में से एक अज़ीम और प्रसिद्ध शहर है। उन्होंने वहां सुहार बिन फुलान अब्दी को अपना जांनशीन बनाया और फिर मज़ीद आगे बढ़ते हुए मरू ख़ुरासान के बादशाह के शहरों की तरफ़ रवाना हुए। मरू ख़ुरासान के बादशाह के शहरों और कस्बों में सबसे प्रसिद्ध है। यह नीशापुर से 210 मील की दूरी पर वाक़्य है। इस दौरान मध्य में किसी से कोई जंग नहीं हुई। इसलिए नीशापुर की तरफ़ मुतर्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन शाखियर को भेजा और सरखस की तरफ़ हारिस बिन हस्सान को रवाना किया। सरखस भी ख़ुरासान के नवाह में एक पुराना और बड़ा शहर है जो नीशापुर और मरू के मध्य स्थित है। बहरहाल जब अहनफ़ बिन क़ैस, मरू के बादशाह के क़रीब पहुंचा तो यज़्दज़र्रद मरूरोज़ चला गया और वहां रहने लगा। मरूरोज़ जो है उस का यह नाम इसलिए है कि मरू उस सफ़ैद पत्थर को कहते हैं जिसमें आग जलाई जाती है। न वह काला होता है और न लाल और रूज़ फ़ारस्सी में दरिया को कहते हैं इसलिए यह दरिया का मरू हुआ। यह मरू शाहे जहाँ से पाँच दिन की दूरी पर एक बहुत बड़े दरिया पर स्थित है। अहनव बिन क़ैस मरू के बादशाह में फ़िरोकश हो गए। यज़्दज़र्रदमर पहुंचने के बाद ख़ौफ़ के मारे मुख़्तलिफ़ हाकिमों के पास सहायता का निवेदन किया। उसने ख़ाकान से भी सहायता का निवेदन किया। शाहे सुग़द को भी तहरीर किया कि फ़ौज के माध्यम से उसकी सहायता की जाए। सुग़द वह क्षेत्र है जिस में समरक़ंद और बुखारा इत्यादि स्थित हैं। तथा उसने शहनशाह चीन से भी सहायता का निवेदन किया। अहनफ़ बिन क़ैस ने मरू की बादशाह पर हारिस बिन नुमान बाहीली को अपना जांनशीन निर्धारित किया और इस अरसा में कूफ़ा की फ़ौजें उनके चारों सरदारों की क़ियादत में अहनफ़ बिन क़ैस के पास पहुंच गईं। जब समस्त फ़ौजें मरू के बादशाह के पास गईं तो अहनफ़ बिन क़ैस ने मरू के बादशाह से मरूज़ की तरफ़ फ़ौजकशी की। जब यज़्दज़र्रद को यह ख़बर मिली तो वह बलख की तरफ़ रवाना हो गया। बलख भी जीहून के दरिया के क़रीब ख़ुरासान का एक ख़ूबसूरत शहर था इसलिए अहनफ़ बिन क़ैस मरूरू में मुक़ीम हो गए। जब कूफ़ा की फ़ौजें सीधे बलख रवाना हो गईं तो फिर अहनफ़ बिन क़ैस भी उनके पीछे रवाना हो गए। अंततः बलख में कूफ़ा वालों की फ़ौजे और यज़्दज़र्रद की फ़ौज का सामना हुआ और फ़रीक़ैन के मध्य मुक़ाबला हुआ। नतीजा यह निकला कि अल्लाह तआला ने यज़्दज़र्रद को मात दे दी और वह ईरानियों को लेकर दरिया की तरफ़ रवाना हुआ और दरिया पार कर के भाग गया। इतने में अहनफ़ बिन क़ैस भी कूफ़ा की फ़ौजों के साथ आ मिले। उस वक़्त अल्लाह तआला ने उनके हाथों बलख़ को फ़तह करा दिया। इसलिए बलख़ अहल-ए-कूफ़ा की फ़ुतूहात में संलग्न था। इस के बाद ख़ुरासान के वे बाशिंदे जो भाग गए थे या क़िला बंद हो गए थे और नीशापुर से लेकर तखारिस्तान के बाशिंदे सब सुलह के लिए आने लगे तखारिस्तान यह जो इलाक़ा है यह बहुत से शहरों पर मुश्तमिल है और यह ख़ुरासान के नवाह में है। इस का सबसे बड़ा शहर तालिकान है। इस के बाद अहनफ़ बिन क़ैस वापस मरू गए और वहां रहने लगे। जबकि रबई बिन आमिर जो अरब के शुरफ़ा में से थे उनको तखारिस्तान में अपना जांनशीन बनाया। अहनफ़ बिन क़ैस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तह ख़ुरासान की ख़बर लिख कर भिजवाई। फ़तह ख़ुरासान की ख़बर सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैं चाहता था कि उनके ख़िलाफ़ कोई लश्कर न भेजा जाता और मेरी इच्छा थी कि उनके और हमारे मध्य आग का समुंद्र रोक बनता। ये कहते हैं जी ज़मीनों पर कब्ज़ा करना चाहते थे, मुल्कों पर कब्ज़ा करना चाहते थे। लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह इच्छा थी कि मैं फ़ौज नहीं भेजना चाहता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह बात सुन कर फ़रमाया। हे अमीरुल मौमेनीन! यह तो ख़ुशी का स्थान है आप रज़ियल्लाहु अन्हो को क्या परेशानी है? फ़तह हो गई और आप कहते हैं रोक पैदा हो जाती है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हाँ ख़ुशी की बात है परन्तु परेशान इस बात पर हूँ कि ये लोग तीन मर्तबा अह्द शिकनी करेंगे। एक रिवायत में है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह सूचना मिली कि अहनफ़ बिन क़ैस का मरू के दोनों शहरों पर कब्ज़ा हो गया है और उन्होंने बलख भी फ़तह कर लिया है तो आपने फ़रमाया अहनफ़ बिन क़ैस अहल-ए-मशरिक़ के सरदार हैं। फिर अहनफ़ बिन क़ैस को यह लिखा कि तुम दरिया पार न करना बल्कि तुम इस से पहले के इलाक़े में मुक़ीम रहो। जिन विशेषताओं के साथ तुम ख़ुरासान में दाख़िल हुए थे आइन्दा भी तुम इन आदात पर क़ायम रहना। इस तरह फ़तह-ओ-नुसरत हमेशा तुम्हारे क़दम चूमेगी जबकि तुम दरिया को उबूर करने से परहेज़ करो अन्यथा तुम नुक़्सान उठाओगे। (तारीख़ तिब्री अनुवाद, भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ 183 से 185 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)(तारीख़ अलतिबरी, भाग 2 पृष्ठ 546- 547 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(मौअज्जमुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 26 105 भाग 3 पृष्ठ 451- 250 - 37, 191- 252, भाग 4 पृष्ठ 347- 471- 253 दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत)

यज़्दज़र्रद ने पहले अपने पड़ोसी देशों को मदद के लिए बुलाया था। इस समय तो उन देशों ने कोई विशेष सहायता नहीं की परन्तु अब यज़्दज़र्रद ख़ुद अपनी साम्राज्य से भाग कर उनके पास मदद का तालिब हुआ और उन देशों से मदद हासिल कर के दुबारा अपना मुल्क फ़तह करने का क़सद किया। तुर्क सरदारों ख़ाका ने उस का साथ दिया और बलख में अपनी फ़ौज लेकर आ गया। बलख दरिया जीजून के क़रीब ख़ुरासान का एक ख़ूबसूरत शहर था। मुस्लमान बीस हज़ार की संख्यां में थे। अहनफ़ ने तुर्क के घोड़े सवारों के तीन फ़ौजी क़तल कर दिए जिस से तुर्क सरदार खाकान बदशगुनी लेता हुआ वापस चला गया। चीन के शहनशाह ने मुस्लमानों के हालात और वाक़ियात सुनने के बाद यज़्दज़र्रद को लिखा कि तुम्हारे दूत ने मुस्लमानों की जो विशेषताएं वर्णन की हैं मेरे ख़्याल में यदि वे पहाड़ से भी टकरा जाएं तो उसे टुकड़े टुकड़े कर दें और यदि मैं तुम्हारी मदद के लिए आऊँ तो जब तक वे अर्थात मुस्लमान इन विशेषताओं पर क़ायम हैं जो तुम्हारे क़ासिद ने मुझे बताए हैं कि ये विशेषताएं हैं तो वे मेरा तख़्त भी छीन लेंगे और मैं उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकूँगा इसलिए तुम उनसे संधि कर लो। यज़्दज़र्रद मुख़्तलिफ़ शहरों में फिरता रहा यहां तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में क़तल हुआ।

(सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़िताब अज़ पृष्ठ 433 से 435 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.) (तारीख़ अल्तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 548 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

अहनफ़ बिन क़ैस ने फ़तह की ख़ुशख़बरी और माल-ए-ग़नीमत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में रवाना कर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को जमा किया और उनसे सम्बोधन फ़रमाया। फ़तह के विषय में तहरीर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर पढ़ कर सुनाई गई। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने ख़ुत्बा में फ़रमाया यक़ीनन अल्लाह तबारक व तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन फ़रमाया है और इस हिदायत का वर्णन फ़रमाया है जिसके साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा गया था। और अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करने वालों से जल्द सवाब और दुनिया और आख़िरत में देर से भलाई के मिलने का वादा फ़रमाया है। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ुरआन-ए-करीम की यह आयत पढ़ी। هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ۙ وَ لَوۡ کَرِهَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ (तौबा:33) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीन हक़ के साथ भेजा ताकि वे उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे ख़ाह वे मुशरिक कैसा ही नापसंद करें। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपना वादा पूरा कर दिया और अपने लश्कर की मदद की। सुनो! अल्लाह ने मजूसी बादशाहत को हलाक कर दिया और उनके इत्तिहाद को टुकड़े टुकड़े कर दिया। अपनी हुकूमत की एक बालिशत ज़मीन भी अब उनकी मिल्कियत में बाक़ी नहीं कि वे किसी मुस्लमान को नुक़्सान पहुंचा सकें। सुनो अल्लाह ने तुमको उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके अम्वाल और उनके बेटों का वारिस बना दिया है ताकि वे देखे कि तुम कैसे आमाल करते हो। इस बात को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लो कि तुम्हारी तरह बहुत सी कौमें फ़ौजी ताक़त की मालिक थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मुस्लमानों को नसीहत फ़र्मा रहे हैं। अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लो कि तुम्हारी तरह बहुत सी कौमें फ़ौजी ताक़त की मालिक थीं और पिछले ज़माने की बहुत सी मुहज़्ज़ब कौमें दूर दराज़ के देशों में क़ाबिज़ हो गई थीं। अल्लाह अपना आदेश नाफ़िज़ करने वाला है और अपने वादे को पूरा करने वाला है और एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम को प्रकट करेगा। तुम लोग उसके अहकामात को नाफ़िज़ कराने

के लिए ऐसे व्यक्ति की पैरवी करो जो तुम्हारे लिए उस के अह्द को पूरा करे और तुम्हारे लिए ख़ुदाई वादे को पूरा कर के दिखाए। तुम अपनी हालत में कोई तब्दीलिया और बदलाव न करना अन्यथा अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अतिरिक्त लोगों से बदल देगा। यदि बदल दोगे अपने दीन को भूल जाओगे, जो अहकामात हैं उन पर अमल नहीं करोगे तो फिर अल्लाह तआला दूसरे लोगों को ले आएगा। फ़रमाया: मुझे इस वक़्त उम्मत-ए-मुस्लिमा की तबाही और बर्बादी का केवल तुम्ही से अंदेशा है। मुझे यह भय नहीं कि दुश्मन मुस्लिम उम्मा को तबाह करेगा बल्कि मुस्लमानों की मुस्लिम उम्मा की तबाही और बर्बादी का केवल तुम्ही मुस्लमानों से ही अंदेशा है और ख़ौफ़ है।

(तारीख़ अलतिबरी, भाग 2 पृष्ठ 549 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(तारीख़ तिब्री अनुवाद, भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ 190 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)

और आज हम देख रहे हैं कि यही बात सच्च साबित हो रही है। मुस्लमान ही मुस्लमान की गर्दनें मार रहा है। उनको ख़त्म कर रहा है। एक दूसरे पर हमले कर रहा है। मुल्क मुल्क पर चढ़ाई कर रहे हैं और कहने को यह जिहाद है लेकिन मुस्लमान मुस्लमानों को क़तल कर रहा है।

फ़तह इस्तख़्रा : इस्तख़्रा फ़ारस का केन्द्रीय शहर था। यह सासान बादशाहों का पुराना मर्कज़ी और पवित्र स्थान था। यहां पर उनका क़दीम आग का घर भी था जिसकी निगरानी ख़ुद शहनशाह-ए-ईरान करता था। हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस के स्थान का इरादा करते हुए उस की तरफ़ पेशक़दमी की और अहले इस्तख़्रा के साथ जोर के स्थान पर मुक़ाबला हुआ। मुस्लमानों ने वहां उनके साथ भरपूर जंग लड़ी। फिर अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अहल जोर के मुक़ाबले पर फ़तह अता की और मुस्लमानों ने इसे फ़तह कर लिया। बहुत से लोगों को क़तल किया गया और बहुत से लोग भाग गए। हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने काफ़िरों को जिज़्या अदा करने और इस्लामी राज्य में गैर मुस्लिम नागरिक बन कर रहने की दावत दी। इसलिए उन्होंने उनसे ख़त और ख़िताबत की और हज़रत उसमान बिन अबुल आस भी उनसे पत्राचार करते रहे। अंतत: उनके हाकिम हुर्मुज़ ने इस पेशकश को क़बूल कर लिया और जिज़्या अदा करने पर राज़ी हो गए। इसलिए जो लोग फ़तह इस्तख़र के वक़्त भाग गए थे या अलग हो गए थे सब जिज़्या अदा करने की शर्त के साथ दुबारा अमन की जगह पर वापस आ गए। दुश्मन की शिकस्त के बाद हज़रत उसमान बिन अबुल आस ने सब माल-ए-ग़नीमत जमा किया और इस का पंचा भाग निकाल कर अमीरुल मौमेनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेज दिया और बाक़ी हिस्सा मुस्लमानों में तक़सीम की उद्देश्य से रख लिया और समस्त मुस्लमान फ़ौजों को लूट मार से रोक दिया और छीनी हुई चीज़ों को वापस करने का आदेश दिया। जो कुछ लोगों से छीना था सिपहसालार ने कहा कि सब वापस करो। फिर हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त लोगों को इकट्ठा किया और फ़रमाया हमारा मामला हमेशा बाम-ए-उरूज पर रहेगा और हम समस्त कठिनाइयों से महफ़ूज़ रहेंगे जब तक कि हम चोरी और ख़ियानत न करें। जब हम माल-ए-ग़नीमत में ख़ियानत करने लगेंगे और ये नापसंदीदा बातें हमारे अंदर नज़र आएंगी तो ये बुरे काम हमारी अक्सरियत को ले डूबेंगे। ख़ियानत करोगे, चोरी करोगे तो फिर यही बातें तुम्हें ले डूबेंगी और आजकल के मुस्लमानों में यही कुछ हमीं नज़र आ रहा है। आपस में ही लूट मार है या जहां भी जाते हैं वहां लूट मार है, बददियानती है और इन्ही बद अख़लाक़ियों ने उनको बिल्कुल ही किसी काम का नहीं छोड़ा और हर जगह दुनिया में बदनाम हो रहे हैं।

हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़तह के दिन फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम के साथ भलाई का इरादा करता है तो उन्हें हर किस्म की बुराईयों से बचाता है और उनके अंदर अमानत और दियानतदारी की विशेषताएँ पैदा फ़र्मा देता है। इसलिए तुम अमानतों की हिफ़ाज़त करो क्योंकि तुमसे अपने दीन-ओ-मज़हब की जो चीज़ सबसे पहले छोड़ोगे वह है अमानत। और जब तुम्हारे अंदर से दियानतदारी जाती रहेगी तो रोज़ाना कोई न कोई नेकी तुम्हारे अंदर से जाती रहेगी। दियानतदारी गई तो नेकियां भी ख़त्म होनी शुरू हो जाएँगी।

हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त के आख़िरी ज़माने और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर ख़िलाफ़त के पहले वर्ष शहरक ने बग़ावत कर दी और उसने अहल-ए-फ़ारस को भड़काया और उनको भड़काने के नतीजा में अहल-ए-फ़ारस ने अह्द शिकनी की। हज़रत उसमान बिन अबुल आस को उनके दमन के लिए दुबारा भेजा गया और पीछे से हज़रत अब्दुल्लाह बिन माअमर रज़ियल्लाहु अन्हो और शिब्लाबन माअबद मजिल्ली के साथ में सहायता के लिए फ़ौज भेजी गई। उनका फ़ारस के स्थान पर दुश्मन से सख़्त मुक़ाबला हुआ जिसमें शहरक और उसका बेटा मारा गया और इसके अतिरिक्त बहुत से लोगों को भी क़तल किया गया और शहरक को हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई हकम बिन अबुल आस ने क़तल किया।

(तारीख़ तिब्री अनुवाद ,भाग सोम, हिस्सा प्रथम,पृष्ठ 192-193 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हो सतरह हिज्री में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में पहली मर्तबा इसे फ़तह किया था। इसके रहने वाले लोगों ने सुलह के बाद वादा तोड़ा जिसके परिणाम में बग़ावत फैल गई। इस का अंत करने के लिए हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने बेटे और भाई को भेजा जिन्हों ने बग़ावत दूर की और इस के अमीर को क़तल कर दिया जिसका नाम शहरख था।

(सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़िताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 436 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.) (अलकामिल फ़िल तारीख़ इब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 382-383 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

फ़सा और दरा बजिरद : हज़रत सारिया बिन ज़ुनीम रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़सा और दरा बजिरद शहर की तरफ़ रवाना फ़रमाया। यह 23 हिज्री का वाक़िया है। फ़सा फ़ारस का एक पुराना शहर था जो शीराज़ से 216 मील की दूरी पर वाक़्य था। दरा बजिरद फ़ारस का एक वसीअ इलाक़ा है जिस में फ़सा और अन्य शहर थे। दलायले नाबुव्व: में रिवायत है। हज़रत इब्न-ए-उमर वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लश्कर हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में रवाना फ़रमाया। एक दिन जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़िताब कर रहे थे कि अचानक ऊंची आवाज़ में कहने लगे यह हे सरिया अल् जबल। हे सरिया! पहाड़ की तरफ़ हट जाओ।

तारीख़ तिब्री में है हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत सरिया बिन ज़ूनिम रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़सा और दारा बजिर्द के इलाक़े की तरफ़ रवाना किया। उन्होंने वहां पहुंच कर लोगों का घेराव कर लिया। इस पर उन्होंने अपने हिमायती लोगों को अपनी मदद के लिए बुलाया तो वे मुस्लमान लश्कर के मुक़ाबले के लिए सहरा में इकट्ठे हो गए और जब उनकी संख्यां ज़्यादा हो गई तो उन्होंने हर तरफ़ से मुस्लमानों को घेर लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जुमा के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे कि आपने फ़रमाया : हे सारिया बिन ज़ुनेम! अल्जबल अल्जबल। अर्थात हे सरिया बिन ज़ुनेम! पहाड़ पहाड़। मुस्लमान लश्कर जिस जगह पर मुक़ीम था उसके क़रीब ही एक पहाड़ था। यदि वे उस की पनाह लेते तो दुश्मन केवल एक तरफ़ से हमला-आवर हो सकता था। अत: उन्होंने पहाड़ की जानिब पनाह ले ली। इस के बाद उन्होंने जंग की और दुश्मन को शिकस्त दी और बहुत सा माल-ए-ग़नीमत हासिल किया। इस माल-ए-ग़नीमत में जवाहरात का एक सन्दूकचा भी था जिसे मुस्लमान लश्कर ने आपसी इत्तिफ़ाक़ राय से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए भेंट कर दिया। हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस संदूक़चे के साथ और फ़तह की ख़ुशख़बरी के साथ एक दूत को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ भिजवाया। जब वह दूत मदीना पहुंचा तो उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों को खाना खिला रहे थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में वह डंडा था जिस के माध्यम से वह ऊंटों को हँकाया करते थे। इस क़ासिद ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से बात करने की इच्छा ज़ाहिर की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे खाने पर बिठा दिया। इसलिए वह खाने पर बैठ गया। जब वह खाने से फ़ारिग़ हुआ तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जाने लगे। वह व्यक्ति फिर खड़े हो कर उनके पीछे पीछे जाने लगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको अपने पीछे आते देखकर गुमान किया कि इस व्यक्ति का पेट अभी नहीं भरा। इसलिए जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो आपने घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया अंदर आ जाओ और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने नानबाई को आदेश दिया कि दस्तरख्वान पर खाना लाए। इसलिए खाना लाया गया जो रोटी और ज़ैतून और नमक पर मुश्तमिल था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस व्यक्ति से फ़रमाया

खाओ जब वह खाने से फ़ारिग़ हुआ तो उस व्यक्ति ने कहा हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो! मैं सरिया बिन ज़ुनेम का दूत हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया स्वागतम। फिर वह आप रज़ियल्लाहु अन्हो के क़रीब आया यहां तक कि उस का घुटना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के घुटने को छूने लगा। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस से मुस्लमानों के बारे में पूछा। फिर सरिया के बारे में पूछा तो उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बताया। फिर उसने संदूक़चे का हाल वर्णन किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसकी तरफ़ देखा और बुलंद आवाज़ फ़रमाया: नहीं। इस में कोई इज़्ज़त वाली बात नहीं है। उस लश्कर के पास जाओ और उसे उनके मध्य तक़सीम करो। ये जवाहरात जो मुझे भेजे हैं ये लश्कर को ही तक़सीम कर दो। उसने अर्ज़ किया कि हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो मेरा ऊंट पतला हो गया है और मैंने इनाम की आशा पर क़र्ज़ भी लिया था। अत: आप मुझे इतना दें जिस से मैं उनकी मुआवज़ा कर सकूँ। वह इसरार करता रहा यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस के ऊंट के बदले सदक़े के ऊंटों में से एक ऊंट उसे दिया और उस का ऊंट लेकर सदक़े के ऊंटों में संलग्न किया और वह एलची निराश और महरूम होते हुए बस्ता पहुंचा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के आदेश पर अमल किया।

यह भी वर्णन किया जाता है कि जब क़ासिद फ़तह की ख़ुशख़बरी लेकर मदीना आया तो अहल-ए-मदीना ने उस से सरिया के बारे में पूछा और फ़तह के बारे में और यह कि क्या जंग के दिन मुस्लमानों ने कोई आवाज़ सुनी थी? उसने कहा कि हाँ हमने सुना था हे सारिया अल्जबल। अर्थात हे सरिया पहाड़ की तरफ़ हट जाओ। इस वक़्त क़रीब था कि हम हलाक हो जाते। अत: हमने पहाड़ की तरफ़ पनाह ली तो अल्लाह तआला ने हमें फ़तह अता फ़रमाई।

(तारीख़ तिब्री भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ 194 से 196 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 553-554 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(द्लायेल नबूव्व: लिल्बहीकी, भाग 6 पृष्ठ 370 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)(सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 436 दारुल मारूफ बेरूत 2007 ई.)(मौअज्ज्मुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 273 भाग 3 पृष्ठ 434 दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस वाक़िया को इस तरह वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक वाक़िया लिखा है कि उनकी ख़िलाफ़त के दिनों में वह मिंबर पर चढ़ कर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे कि बे-इख़्तियार उनके मुख पर ये शब्द जारी हुए। يَا سَارِيَةُ اَلْجَبَلَ ، يَا سَارِيَةُ اَلْجَبَلَ। अर्थात हे सरिया! पहाड़ पर चढ़ जा। हे सरिया! पहाड़ पर चढ़ जा। चूँकि यह वाक्यांश बे-तअल्लुक़ थे लोगों ने उनसे सवाल किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह क्या कहा? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मुझे दिखाया गया कि एक जगह सरिया जो इस्लामी लश्कर के एक जरनैल थे खड़े हैं और दुश्मन उनके पीछे से इस तरह हमला-आवर है कि क़रीब है कि इस्लामी लश्कर तबाह हो जाए। इस वक़्त मैंने देखा तो पास एक पहाड़ था कि जिस पर चढ़ कर वह दुश्मन के हमला से बच सकते थे। इसलिए मैंने उनको आवाज़ दी कि वे इस पहाड़ पर चढ़ जावें। अभी ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि सारिया की तरफ़ से ठीक इसी प्रकार के मज़मून की सूचना आई और उन्होंने यह भी लिखा कि इस वक़्त एक आवाज़ आई जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ से मिलती थी जिसने हमें ख़तरा से आगाह किया और हम पहाड़ पर चढ़ कर दुश्मन के हमला से बच गए।'' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "इस वाक़िया से मालूम होता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की भाषा उस वक़्त उनके अपने क़ाबू से निकल गई थी और उस सर्व शक्तिमान ख़ुदा के कब्ज़ा में थी जिसके लिए फ़ासिला और दूरी कोई वस्तु है ही नहीं।"

(तक़दीर-ए-इलाही, अनवारुल ऊलूम, भाग 4, पृष्ठ 575)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस बारे में फ़रमाते हैं। "हम यह भी कहते हैं कि यह इल्ज़ाम कि सहाबा किराम से ऐसे इल्हाम साबित नहीं हुए बिल्कुल बेजा और ग़लत है क्योंकि अहादीस सहीहा की दृष्टि से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के इल्हामत और ख़वारिक़ बकसरत साबित हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का सरिया के लश्कर की ख़तरनाक हालत से इल्हा-ए-इलाही से अवगत हो जाना जिसको बीहक़ी ने इब्न-ए-उमर से रिवायत किया है यदि इल्हाम नहीं था तो और क्या था और फिर उनकी यह आवाज़ कि यह सरिया अल अल। मदीना में बैठे हुए मोनहा से निकलना और वही आवाज़ क़ुदरत-ए-ग़ैबी से सरिया और इस के लश्कर को दूर दराज़ दूरी से सुनाई देना यदि चमत्कार नहीं था तो और क्या चीज़ थी।"

(बराहीन अहमदिया हिस्सा 4, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 653-654 हाशिया दर हाशिया नंबर 4)

फिर फ़तह किरमान का वर्णन है जो 23 हिज्री में हुई। हज़रत सुहेल बिन अदी के हाथों किरमान फ़तह हुआ। यह भी कहा जाता है कि अब्दुल्लाह बिन बुदील के हाथों फ़तह हुआ।

(सीरत अमीरुल मौमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 436 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हो के हर प्रथम दस्ते पर नुसैर बिन अम्र इज्ली थे। उनके मुक़ाबले के लिए अहले किरमान जमा हो गए। वह अपनी सरज़मीन के क़रीब इलाक़े में जंग करते रहे। आख़िर कार अल्लाह तआला ने उन्हें मुंतशिर कर दिया और मुस्लमानों ने उनका रास्ता रोक लिया। नुसैर ने उनके बड़े बड़े सरदारों को क़तल कर दिया। इसी तरह हज़रत सुहेल बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो ने देहातियों के दस्ते के माध्यम से दुश्मन के रास्ते को जीरफ़त स्थान तक रोक लिया। हज़रत अब्दुल्लाह भी शीर के रास्ते वहां पहुंचे और हसब-ए-मंशा इस स्थान पर उन्हें बहुत सारे ऊंट भेड़ बकरियां मिलीं तो उन्होंने ऊंटों और भेड़ बकरियों की क़ीमत लगाई। उनकी क़ीमत में अरब के ऊंटों से बड़े होने के कारण उनमें मतभेद पैदा हुआ। इसलिए इस इख़तिलाफ़ को ख़त्म करने के लिए उस के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी तरफ़ लिखा कि अरबी ऊंट के गोश्त के अनुसार क़ीमत लगाई जाती है और ये ऊंट भी इसी की भांति हैं। यदि वे तुम्हारी राय के अनुसार बढ़कर है तो उसकी क़ीमत में बढ़ोतरी कर दो। जो माल हाथ आया था उस के अनुसार उस के जानवरों की क़ीमत लगाई जा रही है। एक रिवायत में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर ख़िलाफ़त में हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुदेल बिन वर्का ख़ुज़ाई ने किरमान को फ़तह किया। फिर फ़तह किरमान के बाद वे तब्सीन आए। फिर वहां से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और कहने लगे कि मैंने तब्सीन को फ़तह कर लिया है। आप मुझे ये दोनों इलाक़े जागीर में दे दें। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये दोनों इलाक़े उनको जागीर में देने का इरादा किया तो किसी ने आप से कहा कि ये दोनों इलाक़े बहुत बड़े ज़िले हैं और ख़ुरासान के दरवाज़े हैं। इस पर आपने उनको ये दोनों इलाक़े जागीर में देने का इरादा बदल दिया।

(तारीख़ तिब्री अनुवाद, भाग 3, हिस्सा प्रथम पृष्ठ 196-197 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)

फ़त सजिस्तान, यह भी 23 हिज्री की है। सजिस्तान ख़ुरासान से बड़ा इलाक़ा है और इस की सरहदें दूर दरवाज़ क्षेत्रों तक फैली हुई थीं। यह इलाक़ा सिंध और दरिया बलख़ के मध्य था। इस की सरहदें बहुत दुश्वार-गुज़ार थीं और आबादी भी बहुत ज़्यादा थी। इस सजिस्तान को ईरानी सिस्तान भी कहा जाता है या ईरानी लोग इस को सिस्तान कहते हैं। प्रसिद्ध ईरानी पहलवान रुस्तम इसी इलाक़े का रहने वाला था। यह किरमान के उत्तर में वाक़्य था उस का सदर स्थान ज़रनज था। क़दीम ज़माने में यह बहुत बड़ा इलाक़ा था और हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में यह बहुत अहम इलाक़ा था। यहां के लोग क़ंधार तुर्क और दूसरी क़ौमों से जंग करते रहते थे। आसिम बिन अम्र ने सजिस्तान का रुख किया और अब्दुल्लाह बिन नुमेर भी फ़ौज लेकर इसके साथ संलग्न हो गए। अहले सजिस्तान से उनके क़रीबी इलाक़े में मुक़ाबला हुआ और मुस्लमानों ने उन्हें शिकस्त दी और अहले सजिस्तान भाग गए। इसलिए मुस्लमानों ने उनका पीछा किया और ज़रनज स्थान पर उनका घेराव कर लिया गया और साथ-साथ मुस्लमान जहां-जहां सम्भव हुआ मुख़्तलिफ़ क्षेत्रों को भी फ़तह करते गए। अंतत: अहले सजिस्तान ने ज़रन और अन्य विजय क्षेत्रों के बारे में संधि कर ली और बाक़ायदा मुस्लमानों से समझोता मंज़ूर कराया और अपने सुलह नामा में यह शर्त मंज़ूर करा ली कि उनके जंगल महफ़ूज़ चरागाहों की तरह समझे जाऐंगे। इसलिए जब मुस्लमान वहां से गुज़रते थे तो उनके जंगलों से बच कर निकलते थे कि वे कहीं उन्हें नुक़्सान पहुंचा कर अह्द तोड़ने वाले न हो जाएं। इस हद तक मुस्लमान एहतियात करते थे। बहरहाल अहले सजिस्तान ख़राज देने पर राज़ी हो गए और मुस्लमानों ने उनकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी को क़बूल कर लिया।

(तारीख़ तिब्री अनुवाद, भाग 3, हिस्सा प्रथम पृष्ठ 197, दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)

फ़तह मिक्रान, यह भी 23 हिज्री की है। हकम बिन अम्र के हाथों मुक्रान (आजकल उसे मकरान कहा जाता है। पुरानी तारीख़ों में मुकरान लिखा हुआ है, यह) फ़तह हुआ। लेकिन फिर शिहाब बिन मुखारिक, सुहेल बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह भी लश्करों समेत उनके साथ मिल गए थे। मुस्लमानों ने सिंध के बादशाह के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो कर जंग की और उसे शिकस्त दी। हकम बिन अम्र ने सुहार अबदी के हाथ फ़तह की ख़बर और माल-ए-ग़नीमत भेजा और माल-ए-ग़नीमत में हासिल शूदा हाथियों के बारे में हिदायत तलब की। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तह की खुशखबरी पहुंची तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस से मकरान की ज़मीन के बारे में पूछा। उसने कहा हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो इस के नरम मैदानों की ज़मीन भी पहाड़ों की तरह सख़्त है और वहां पानी की सख़्त कमी है। इस के फल ख़राब हैं और वहां के दुश्मन बहुत दिलेर हैं और वहां भलाई के मुक़ाबले में बुराई बहुत ज़्यादा है। वहां बड़ी संख्यां भी थोड़ी मालूम होती है और थोड़ी संख्यां ज़ाए हो जाती है और इस का पिछ्ला हिस्सा तो इस से भी बुरा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस के इस अंदाज़-ए-गुफ़्तगु पर फ़रमाया कि क्या तुम क़ाफ़िया-पैमाई (अश'आर की गिनती बढ़ाने के लिए क़ाफ़ीए ढूंढ ढूंढ कर शेर कहना) कर रहे हो या वाक़ई सूरत-ए-हाल की ख़बर दे रहे हो। उसने इस पर कहा कि मैं सही ख़बर आप रज़ियल्लाहु अन्हो तक पहुंचा रहा हूँ। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यदि तुम सही बतला रहे हो तो बख़ुदा मेरा लश्कर वहां हमला नहीं करेगा। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हकम बिन अम्र और हज़रत सुहेल को यह आदेश तहरीर फ़रमाया और यह आदेश तहरीर फ़र्मा कर रवाना किया कि तुम दोनों के लश्करों में से कोई भी मकरान से आगे पेशक़दमी न करे और दरिया के इस पार के इलाक़े तक महिदूद रहे। तथा आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह भी आदेश दिया कि हाथियों को इस्लामी सरज़मीन पर ही बेच दिया जाए और इस से हासिल होने वाले माल को मुस्लमान लश्करों में तक़सीम कर दिया जाए।

(तारीख़ तिब्री अनुवाद, भाग 3, हिस्सा पृष्ठ 198-199 दारुल-इशाअत कराची 2003 ई.)(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 555 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इस जंग की जो तफ़सीलात वर्णन की गई हैं वह तिब्री से ली गई हैं। इस जंग के विषय में अल्लामा शिबली ने एक नोट भी दिया है कि फ़ुतूहात फ़ारूक़ी की अख़ीर हद यही मकरान है लेकिन यह तिब्री का वर्णन है। बलाज़री के इतिहासकार की रिवायत है कि दुबैल के नशीबी क्षेत्रों और थाना तक फ़ौजें आएं। यदि यह सही है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द में इस्लाम का क़दम सिंध-और-हिंद में भी आ चुका था। तथा वे हाशिया में लिखते हैं कि आजकल मकरान का आधा हिस्सा बलोचिस्तान कहलाता है। यदि बलाज़री के इतिहासकार फ़ुतूहात-ए-फ़ारूक़ी की हद सिंध के शहर दीबल तक लिखता है परन्तु तिब्री ने मकरान को ही अख़ीर हद क़रार दिया है।

(माख़ूज़ अज़ उल-फ़ारूक़ अज़ श्बिली, पृष्ठ 157 प्रकाशन दारुल-इशाअत कराची 2004 ई.)

तो बहरहाल यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने का वर्णन अभी चल रहा है। अभी आगे भी वर्णन होगा।

जुमा के बाद में एक टर्किश इंटरनैट रडियो का इफ़्तिताह करूँगा। इस रडियो चैनल का नाम इस्लाम अहमदीतीन सीसी (Islam ahmediyetin sesi) अर्थात सदाए इस्लाम अहमदियत है जो अलहम्दो लिल्लाह अब चौबीस घंटे की प्रसारितियात के लिए तैयार है। यह रडियो दुनिया भर में टैब्लेट और स्मार्टफोन और लैपटॉप इत्यादि पर एक लिंक के माध्यम सुना जा सकेगा। चार घंटे पर मुश्तमिल एक पैकेज (package) को छः दफ़ा दिन में repeat किया जाएगा। इस पैकेज में एक घंटा तिलावत तुर्की अनुवाद के साथ। हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, कलाम अल्इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, तुर्की भाषा में मेरे ख़ुत्बात का अनुवाद तथा एक मज्लिस प्रश्न और उत्तर भी प्रसारित हुआ करेगी। दुनिया के बीस देशों से ज़ायद देशों में तब्लीग़ी और तरबियती मक़ासिद के लिए इस रडियो से इस्तिफ़ादा कर सकेंगे। तब्लीग़ी मैदान में भी और तरबियती मक़ासिद के लिए भी इंशा-ए-अल्लाह इस रडियो से इस्तिफ़ादा होगा। उदाहरणता आज़रबाईजान है, जॉर्जिया है, ये तुर्की भाषा बोलने वाले मुल्क हैं। कई पुरानी रूसी रियास्तें हैं जहां तुर्की भाषा बोली जाती है। इसी तरह मुल्क तुर्की और वे सभी यूरोपीयन देशों में जिनमें तुर्क आबाद हैं इन प्रोग्रामों से फ़ायदा उठा सकते हैं। इस रडियो की तैयारी की तौफ़ीक़ विभाग तब्लीग़ जर्मनी को मिली है। अल्लाह तआला उनको भी प्रतिफल दे और अल्लाह तआला हर लिहाज़ से इस को बाबरकत फ़रमाए। इस को अभी में जुमा की नमाज़ के बाद लॉन्च करूँगा।

बाअज़ ग़ायब जनाज़े हैं उनको में जुमा के बाद अदा करूँगा। साथ यह भी बता दूं कि हमारे प्यारे अज़ीज़ ताले का जनाज़ा अभी पहुंचा नहीं है। शायद चंद दिन लग जाएं तो जब आएगा तो उस के बाद नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की जाएगी इंशा-ए-अल्लाह और फिर वहां उस का वर्णन भी इंशा अल्लाह होगा। जो जनाज़ा ग़ायब आज मैंने पढ़ने हैं उनमें पहला आदरणीय मुहम्मद अलमुख़्तार किबता साहिब का है जो मराक़श थे। 73 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम ने 2009 ई. में बैअत की। बहुत मुख़लिस अहमदी थे। बैअत के बाद जमाअत की ख़िदमत और अहमदियत की तब्लीग़ में हर वक़त लगे रहते थे। समाज में ग़लत अक़ायद की दुरुस्ती में उन्होंने बहुत किरदार अदा किया है।

उनका इलाक़ा पश्चमी मराक़श का था। वहां के सदर साहिब लिखते हैं कि मरहूम रिटायर्ड फ़ौजी थे। पढ़े लिखे थे। अरबी के अतिरिक्त फ़्रांसीसी और स्पेनिश भाषों के माहिर थे। ह्मामतुल बुश्रा पढ़ कर जल्द ही बैअत कर ली। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को भी बड़े शौक़ और मुहब्बत से कम अज़ कम दो बार पढ़ा। फिर तफ़सीर-ए-कबीर का अध्यन किया फिर उस की कापियां करवा कर और जल्द बनवा कर अहमदियों में तक़सीम कीं। कहते हैं जब हमारे इलाक़े में निज़ाम जमाअत क़ायम हुआ तो उन्होंने जमाअती ख़िदमत के लिए ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी और मुख़्तलिफ़ जमाअतों के दौरे किए। माली क़ुर्बानियों में भी आगे आगे रहे। कभी भी उन्होंने यह नहीं कहा कि आज मैं व्यस्त हूँ या यह ख़िदमत नहीं कर सकता। बड़े पुख़्ता वादे के मालिक थे जो कि नौजवानों में भी नहीं मिलता। फिर लिखते हैं कि निज़ाम ख़िलाफ़त की कामिल और तुरंत इताअत करते थे तब्लीग़ का बड़ा जोश था। गाड़ी, बस, रेल और दुकान में हर छोटे बड़े को तब्लीग़ करते। ख़ानदान में हर एक को पैग़ाम-ए-हक़ पहुंचाया। मरहूम नमाज़ तहज्जुद में बाक़ायदा थे। हर सोमवार और गुरूवार को रोज़ा रखते थे। वे दुआएं भी जो मेरी तरफ़ से बताई गई थीं और जुबली की दुआएं भी वे हमेशा पढ़ते थे। रोज़ाना पाँच से दस एहज़ाब तिलावत क़ुरआन-ए-करीम करते रहते थे। चलते हुए क़ुरआन-ए-करीम याद करते थे, दुहराई करते रहते थे और कई दफ़ा रास्ते में चलते हुए तिलावत क़ुरआन में इतने व्यस्त होते कि इधर उधर के माहौल से बे-ख़बर हो जाते थे। मानों क़ुरआन-ए-करीम से तो उन्हें एक इशक़ था बल्कि कुछ तो कहते हैं कि रात को सोते हुए भी उनके मुँह से क़ुरआन-ए-करीम की आयात पढ़ने की आवाज़ें आती थीं। मरहूम ने नौ वर्ष तक मग़रिबी मराक़श में बतौर नायब सदर जमाअत और सदर अन्सारुल्लाह और सैक्रेटरी माल ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम मूसी थे। उनकी पत्नी भी बहुत मुख़लिस और मूसिया हैं।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अगला वर्णन महमूद अहमद साहिब साबिक़ ख़ादिम मस्जिद अक्सा और मस्जिद मुबारक क़ादियान का है जो कि 74 वर्ष की आयु में पिछले दिनों वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मख़दूम हुसैन साहिब आफ़ बेलगाम के बेटे थे जो कि सूबा कर्नाटक से हिज्रत कर के क़ादियान आ गए थे। 28 वर्ष तक उन्होंने मस्जिद अक्सा और मस्जिद मुबारक में ख़ादिम मस्जिद के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम मूसी थे। मरहूम नमाज़ क़ुरआन के पाबंद थे। तहज्जुद गुज़ार और दुआ-गो इन्सान थे। मस्जिद के साथ उनका विशेष लगाओ था। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे और एक बेटी साथ हैं।

अगला वर्णन सौदा साहिबा पत्नी अब्दुर्रहमान साहिब केराला इंडिया का है। 22 जुलाई को 76 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा शम्सुद्दीन साहिब मालाबारी मुबल्लिग़ इंचार्ज कबाबीर की माता थीं। शम्सुद्दीन साहिब कहते हैं कि ख़ाकसार की वालिदा साहिबा वी टी मुहम्मद साहिब मरहूम की बेटी थीं जो ज़िला पालघाट और गावं के सबसे पहले अहमदी थे जिन्हों ने 1937 ई. में बैअत की तौफ़ीक़ पाई। फिर लंबे अरसा तक दुश्मनों की तरफ़ से शदीद अत्याचारों का सामना करते रहे। कहते हैं इसी बाईकॉट के दौरान कि जब माता डेढ़ वर्ष की थीं तो उस वक़्त उनकी वालिदा, ख़ाकसार की नानी और उनकी बड़ी बेटी की वफ़ात हो गई। वफ़ात के बाद दुश्मनों ने नानी को दफ़नाने भी नहीं दिया जिस पर चालीस किलो मीटर दूर शहर के आम क़ब्रिस्तान में उन्हें दफनाना पड़ा। कहते हैं नाना अपनी छोटी बच्ची के साथ हिज्रत कर गए। इस तरह वालिदा बचपन से ही तरह तरह की मुश्किलों में से गुज़रती रहीं। मरहूमा नमाज़ क़ुरआन की पाबंद और मूसिया थीं। लोगों की सेवा और हमदर्दी उनके अंदर कूट कूट कर भरी हुई थी। हर परेशान हाल व्यक्ति के लिए दुआएं करना और यदि सामने हो तो उस की मदद करना आपकी आदत थी। पीछे रहने वालों में शौहर के अतिरिक्त चार बेटे और दो बेटियां साथ हैं और उनके पोते भी वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं और एक बेटे मुबल्लिग़ हैं जो बाहर थे। जनाज़े पर हाज़िर भी नहीं हो सके। अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन सईदा मजीद साहिबा पत्नी शेख़ अब्दुल मजीद साहिब फैसलाबाद का है। पिछले दिनों उनकी वफ़ात 86 वर्ष की आयु में हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे शेख़ वहीद साहिब कहते हैं उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके दादा हज़रत बरकत अली क़ादियानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के माध्यम से हुआ। आपके दादा और दादी दोनों को यह एज़ाज़ मिला कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। सईदा मजीद साहिबा ने लंबा अरसा जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। शुरू में सदर हलक़ा और सैक्रेटरी माल की हैसियत से और फिर 1982 ई. से लजना इमाइल्लाह ज़िला फैसलाबाद की तशकील-ए-नौ होने पर सैक्रेटरी माल के ओहदे पर सात वर्ष निर्धारित रहीं। बहुत मेहनत से बयासी मजालिस में बाक़ायदगी से दौरा जात कर के हर मज्लिस में ओहदेदारान के काम की निगरानी करती रहीं। विभाग माल के रिकार्ड और चंदा जात की बरवक़्त आमद और तरसील पर ख़ुसूसी नज़र रखती थीं। उनकी ज़िला की साबिक़ा सदर बुशरा समीअ साहिबा हैं वह कहती हैं कि एक दफ़ा जमाअती दौरे से वापसी पर डाकूओं ने गाड़ी को रोका। उन्होंने जल्दी से पर्स जिसमें चंदे के पैसे थे वह पैरों में गिरा दियाता कि चंदा महफ़ूज़ रहे और अपना ज़ेवर छिन जाने की ज़रा पर्वा नहीं की। बाक़ी ज़ेवर डाकूओं ने उनसे उतरवा लिया लेकिन चंदे के पैसे बच गए और इस बात पर बड़ी ख़ुश थीं कि चंदे के पैसे बच गए। वफ़ात से कुछ महीने पूर्व जो भी ज़ेवर उनके पास था वह सारा जमाअती तहरीकात में पेश कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का कई बार अध्यन किया। बहुत सी ख़ूबियों की मालिक थीं। ख़ुदा तआला की मुहब्बत में बढ़ी हुई, दुआ-गो, ख़ुदा पर भरोसा करने वाली थीं। ख़िलाफ़त से बहुत मुहब्बत और इशक़ का ताल्लुक़ था। अपने बेटों, बहुओं और पोतों, पोतियों को हमेशा ख़िलाफ़त से जुड़े रहने और ख़लीफ़ा वक़्त के लिए दुआ करने और ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुत्बात सुनने की तलक़ीन करती रहती थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में पति के अतिरिक्त आठ बेटे और कई पोते, पोतिया और पड़ पोते, पड़ पोतिया हैं।

अल्लाह तआला इन सब मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। इनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद उनका नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

&*&*&*&

पृष्ठ 1 का शेष

पहुंचाने वाले होते हैं परन्तु उन्हें इसका कारण नहीं क़रार दिया जा सकता।

हक़ यह है कि ख़ुदा का कलाम बंदे के साथ सीधे होता है। फ़रिश्ते केवल माध्यम के होते हैं और इसी वजह إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ कह कर यह बताया है कि हम इस कलाम की भविष्य में ताज़ा बताज़ा इल्हाम के माध्यम से हिफ़ाज़त करते रहेंगे अर्थात मुजद्दिद और मामूर इत्यादि आया करते रहेंगे।

यह ज़ाहिर है कि जिस किताब के शब्द महफ़ूज़ हूँ परन्तु अर्थों की हिफ़ाज़त न हो वह महफ़ूज़ किताब नहीं कहला सकती। उदाहरण वेद हैं अगर यह फ़र्ज़ भी कर लिया जाए कि वह शब्द शब्द महफ़ूज़ हैं तो भी वह किताब कामिल होने के लिहाज़ से महफ़ूज़ नहीं क्योंकि जिस भाषा में वह नाज़िल हुई हैं वह महफ़ूज़ नहीं रही इस लिए उसके अर्थ बिल्कुल संदिग्ध हो गए हैं। अब अगर ख़ुदा तआला की तरफ़ से इल्हाम पाकर कोई व्यक्ति उस के सही अर्थ न बताए तो कौन यक़ीन के साथ कह सकता है कि वह उस का सही अर्थ बयान कर रहा है याउस के अनुसार अमल कर रहा है। यह कमी उसी सूरत में दूर हो सकती है कि थोड़े थोड़े अरसा के बाद ऐसे लोग खड़े होते रहें जो किताब के सही अर्थों की तरफ़ लोगों को लाते रहें और यह हिफ़ाज़त दाइमी तौर पर क़ुरआन-ए-करीम ही को हासिल है। बेशक दूसरी आसमानी पुस्तकों को भी इस अरसे में कि वे ज़िंदा कुतुब थीं अर्थात दुनिया के लिए काबिल अमल थीं ये हिफ़ाज़त हासिल थी परन्तु अब उन्हें। अब केवल क़ुरआन-ए-करीम ही को यह हिफ़ाज़त हासिल है। केवल इसके मानने वाले हर ज़माना में ख़ुदा तआला से सीधे इल्हाम पाने के मुद्दई होते चले आए हैं और इस ज़माना में जबकि धर्म से विमुखता चरम को पहुंच गई है अल्लाह तआला ने एक ऐसा मामूर मबऊस फ़रमाया है जिस ने कली के तौर पर क़ुरआन की तफ़सीरों को ज़वायद और व्यर्थ की वस्तुओं से पाक करके असली सूरत में दुनिया के सामने पेश किया है। यहाँ तक कि क़ुरआन जो इसी ज़माना के उलूम के सामने एक मा'ज़रत-ख़्वाह (क्षमा चाहने वाले) की सूरत में खड़ा था, अब एक हमला-आवर की सूरत में खड़ा है जिस के सामने सब फ़लसफ़े और मज़ाहिब इस तरह भाग रहे हैं जैसे शेर के सामने से लोमड़ी ۔فَسُبْحَانَ اللهِ الْمَلِكِ الْعَزِيْز अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मेरा दावा है कि इस मामूर के अनुसरण की बरकत से किसी इलम का मतबा ख़ाह क़ुरआन-ए-करीम के किसी मसला पर हमला करे में इस का माक़ूल और मुदल्लिल जवाब दे सकता हूँ और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इलम वाले को साकित कर सकता हूँ। चाहे वक़्ती जोश के अधीन वे खुलम खुल्ला इक़रार करने के लिए तैयार न हो। मैं ने इस का चार सदी से ज़्यादा अरसा में अनुभव किया है । मैं समझता हूँ कि जब से इस मैदान में दाख़िल हुआ हूँ अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़ाहिर व बातिन में कभी मुझे इस बारे में शर्मिंदा होने का अवसर नहीं मिला।

उद्देश्य ख़ुदा तआला ने क़ुरआन मजीद की माअनवी हिफ़ाज़त का निर्भरता केवल अक़ल पर ही नहीं रखी और उसकी व्याख्या की निर्भरता केवल इन्सानी दिमाग़ पर ही नहीं छोड़ी बल्कि ख़ुद अपने कलाम से इस को ज़ाहिर फ़रमाने का ज़िम्मा लिया है जिसका एक फ़ायदा यह भी है कि जब इस तरह से अमली फल ज़ाहिर होते हैं तो क़ुरआन-ए-मजीद के महफ़ूज़ होने का एक स्पष्ट सबूत मिलता रहता है। दवाई अगर फ़ायदा करती है तो हम उसे ताज़ा समझते हैं अन्यथा व्यर्थ की समझते हैं। क़ुरआन-ए-मजीद के ताज़ा फल भी साबित करते रहते हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद महफ़ूज़ और ज़िंदा किताब है और यह क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का ऐसा ज़बरदस्त माध्यम है जो और किसी किताब को उपलब्ध नहीं और न कभी होगा।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

एक हीरा था जो हम से जुदा हो गया। अल्लाह तआला ऐसे वफ़ा करने वाले, ख़िलाफ़त से इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध रखने वाले और दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले जमाअत को अता फ़रमाता रहे

सय्यद तालेअ अहमद शहीद की चमकती हुई विशेषताओं का वर्णन

इसका नुक़्सान ऐसा है जिसने हिला कर रख दिया है। वह प्यारा वजूद वक़्फ़ की रूह को समझने वाला और इस अह्द को हक़ीक़ी रंग में निभाने वाला था जो उसने किया था

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इस हादसे के बाद बहुत से इस मयार के पैदा कर दे

हे प्यारे तालेअ मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हारे इन अंतिम शब्दों से पहले भी मुझे पता था कि तुम्हें ख़िलाफ़त से प्यार और मुहब्बत का सम्बन्ध था

तुम्हारे हर कर्म से, हर हरकत-ओ-सुकून से, जब तुम्हारे हाथ में कैमरा होता था और मैं सामने होता था तब भी और जब तुम कैमरे के अतिरिक्त मिलते थे,

चाहे ज़ाती मुलाक़ात हो या दफ़्तर के काम से, तुम्हारी आँखों की चमक से इस मुहब्बत का प्रकटन होता था, तुम्हारे चेहरे की एक अजीब किस्म की रौनक से इस मुहब्बत का प्रकटन होता था, उद्देश्य कि हर तरह तुम्हारे हर अमल से यह लग रहा होता था कि किस तरह तुम इस मुहब्बत का प्रकटन करो जो तुम्हें ख़लीफ़-ए-वक़्त से है

हे तालेअ! मैं गवाही देता हूँ कि निसंदेह तुमने अपने वक़्फ़ और अह्द की उच्च श्रेणी को हासिल कर लिया है

आशा है कि अल्लाह तआला ने उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में जगह दी होगी

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 सितम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

पिछले दिनों हमारे एक बहुत ही प्यारे बच्चे और वाकिफ-ए-ज़िंदगी प्रिय सय्यद तालेअ अहमद इबन सय्यद हाशिम अकबर की घाना में शहादत हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 23 और 24 अगस्त की मध्य की रात एम. टी. ए की टीम घाना के नार्दन रीजन में रिकार्डिंग कर के कमासी (kumasi) आ रही थी कि रास्ते में सवा सात बजे के क़रीब डाकूओं की फायरिंग से यह जो टीम के तीन मैंबर थे उनमें से दो, अज़ीज़म सय्यद तालेअ अहमद और उमर फ़ारूक़ साहिब ज़ख़मी हो गए। तक़रीबन साढ़े चार घंटे के बाद पहले पोली क्लीनिक में उनका मैडीकल ट्रेटमंट (treatment) हुआ। इसके बाद टमाले बड़े हस्पताल ले जा रहे थे तो रास्ते में सय्यद तालेअ अहमद की वफ़ात हो गई। एम. टी. ए इंटरनैशनल से दूसरे मुल्कों में तो शायद कुछ शहादतें हुई हैं लेकिन यहां की पहली शहादत थी और वाकफ़ीन नौ यू.के की मेरा ख़्याल है शायद पहली शहादत है।

सय्यद तालेअ अहमद आदरणीया अम्तुल लतीफ़ बेगम साहिबा और सय्यद मीर मुहम्मद अहमद साहिब के पौते थे और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के पड़ नवासे और इस तरह हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के पड़ पौते अर्थात पौते के बेटे थे और हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अम्माँ-जान हज़रत नुसरत जहां बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा के छोटे भाई थे। इस लिहाज़ से हज़रत अम्मां जान रज़ियल्लाहु अन्हा से भी उनका सिलसिला मिलता है और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की वजह से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी और अम्माँ-जान से फिर एक रिश्ता क़ायम होता है। इसी तरह यह मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर शहीद के दामाद भी थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। जैसा कि मैंने कहा वक़्फ़-ए-नौ की तहरीक में भी शामिल थे।

बायो मैडीकल विज्ञान में डिग्री हासिल की। फिर जर्नलिज़म में मास्टर्ज़ की। 2013 ई. में ज़िंदगी वक़्फ़ की और फिर मुख़्तलिफ़ दफ़्तरों में काम करने के बाद आख़िर प्रैस और मीडीया में उनका चयन हुआ। इस से पहले सय्यद तालेअ अपनी जमाअत में लोकल लेवल पर भी ख़िदमात बजा लाते रहे थे। खुद्दामुल अहमदिया हार्टले पोल में तब्लीग़, तालीम और इशाअत और इतफ़ाल के विभागों का काम किया। उनकी 2016 ई. में एम.टी. ए न्यूज़ में मुकम्मल तौर पर तक़र्रुरी हुई और इस से पहले यह रिव्यू आफ़ रेलीजंज़ में इंडेक्सिंग(indexing) और टैगिंग (tagging) के हैड के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। एम.टी.ए न्यूज़ के लिए उन्होंने डाकोमैंटरीज़ बनाई और मज़ीद तीन या चार डाकोमैंटरीज़ पर काम कर रहे थे। यह जो मेरी व्यस्तता का हफ़्ता-वार प्रोग्राम है this week with huzur इस को भी उन्होंने initiate किया था, उन्होंने शुरू किया और फिर आख़िर तक इस में विशेष दिलचस्पी से इस की ऐडीटिंग इत्यादि और सारा काम करते रहे और यह प्रोग्राम एम.टी.ए देखने वालों के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। ऐडीटर ताहिर मैगज़ीन के अतिरिक्त मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के विभाग इशाअत में भी ख़िदमत बजा लाते रहे। मुख़्तलिफ़ जमाअती पत्रिकाएँ उदाहरणता रिव्यू आफ़ रिलीजंज़ और तारिक़ मैगज़ीन में लेख भी लिखते रहे और प्रैस ऐंड मीडीया के ऑफ़िस के अधीन मुख़्तलिफ़ देशों में मेरे साथ भी और वैसे भी उन्होंने दौरे किए।

प्रिय तालेअ को अपने काम को ख़त्म करने के लिए और केवल ख़त्म करने के लिए नहीं बल्कि मयार के अनुसार पहुंचाने के लिए एक ग़ैरमामूली जोश और जज़बा होता था और इस के लिए वह किसी ख़तरे की भी परवाह नहीं करता था और उसकी शहादत के वाक़िया से भी ज़ाहिर होता है कि उनको एक लम्हे की भी फ़िक्र नहीं थी कि क्या ख़तरा है। बस यह फ़िक्र थी कि जिस काम के लिए मैं आया हुआ हूँ उसको अहसन रंग में सरअंजाम दे सकूँ और वक़्त पर मुकम्मल कर लूं। इसी लिए ऐसे वक़्त में सफ़र भी शुरू किया जबकि ख़तरे की संभावना बहुत बढ़ गई थी। अबूबकर इबराहीम टमाले (tamale)के ज़ोनल मिशनरी हैं। वह कुछ तफ़सील बताते हुए कहते हैं कि 23 अगस्त को सुबह जब एम.टी.ए की टीम सुलागा (salaga) रवाना होने लगी तो उन्होंने तालेअ को अपना सामान पैक करते देख के कहा कि होटल से चैक आउट कर रहे हो तो सुलागा से वापस आना है और यहां रुकना भी है। तालेअ ने कहा वक़्त कम है इसलिए मैंने वापस कमासी ही जाना है। उनको मौलवी-साहब ने कहा कि आपको सुलागा से वापसी पर देर हो गई तो फिर रात को सफ़र उचित नहीं है लेकिन बहरहाल उन्होंने कहा ठीक है, फिर देखेंगे लेकिन उन्होंने यह भी उन्हें कहा कि मैंने आगे सैरालियून भी जाना है और मेरे पास केवल मज़ीद दो दिन हैं और बहुत सारे काम यहां कमासी इक़रा (accra) में करने वाले हैं। इसलिए मेरा जाना ज़रूरी है लेकिन आप कहते हैं तो देखूँगा। बहरहाल जब वापस आए तो उन्होंने यही फ़ैसला किया कि वापसी का सफ़र करना है और यह वापसी के लिए कमासी रवाना हो गए। पौने सात बजे तालेअ ने उमर फ़ारूक़ साहिब को कहा कि नमाज़ पढ़ लेते हैं। इन सबने मग़रिब और इशा की नमाज़ें बाजमाअत अदा कीं। फिर उनको फ़िक्र थी कि सुलागा से जो रिकार्डिंग कर के लाए हैं और यहां टमाले में की हैं उनकी फाईलज़ करपट (corrupt) न हो जाएं इसलिए सफ़र में ही उन्होंने इस को लैपटॉप पर महफ़ूज़ करने के लिए कोशिश शुरू कर दी और सफ़र के दौरान यही काम कर रहे थे। तो उनको यह नहीं था बर्दाश्त कि किसी तरह भी वक़्त ज़ाए हो। और फिर जो जमाअती सामान है उस की भी उनको हरवक़त फ़िक्र यहाँ तक थी कि यह बड़ा महंगा सामान है, ज़ाए न हो जाए।

बहरहाल पुलिस रिपोर्ट के अनुसार यह कहते हैं जब एम.टी.ए की गाड़ी mpa-ha जंक्शन के क़रीब पहुंची तो डाकूओं ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी जिसके नतीजा में टीम के दो लोग घायल हो गए जैसा कि मैंने बताया। उनके ड्राईवर कहते हैं कि एक गाड़ी सामने से आ रही थी, उसने मुझे ख़तरे का इशारा किया जिसको मैं समझ नहीं पाया लेकिन बहरहाल जब मैंने देखा कि डाकू आगे आ गए हैं, एक दम रात को हैड लाइट्स की रोशनी में मुझे नज़र आए तो बहरहाल मैंने ज़ोर से कलिमा पढ़ा लेकिन साथ ही डाकूओं ने फायरिंग भी शुरू कर दी। सय्यद तालेअ गाड़ी के पिछले हिस्सा में बैठे हुए थे उनको भी अंदाज़ा हो गया फायरिंग सुनके कि डाकूओं (armed robbers) से मुक़ाबला हो रहा है, हमला हो गया है। उमर फ़ारूक़

साहिब कहते हैं कि इस फायरिंग के दौरान मुझे कूल्हे में रान के ऊपर गोली लगी लेकिन इस गोली का मुझे एहसास नहीं हुआ। गोलीयां बरसाने के बाद डाकूओं की तरफ़ से ख़ामोशी हो गई और ये लोग फिर थोड़ी देर बैठे रहे। बहर हाल कहते हैं कि थोड़ी देर के बाद डाकू टार्च लेकर आगे बढ़े और ड्राईवर और मुझे गाड़ी से उतारा और हमारे पास फ़ोन और जो रक़म थी हमने उनके हवाले कर दी। उन्होंने हमें बाहर सड़क पर लिटा दिया, मार पीट की। कहते हैं मेरे सिर पर ज़ोर से डंडा भी मारा जिससे ख़ून निकलना शुरू हो गया लेकिन इस के बावजूद कहते हैं मुझे तालेअ की फ़िक्र ज़्यादा थी। बहरहाल यह भी बीमार हैं ,गोली भी लगी है, सिर भी ज़ख़मी है। अल्लाह तआला उनको भी शिफ़ा दे। उनके लिए भी दुआ करें। बहरहाल इस के बाद अब्दुर्रहमान और उमर फ़ारूक़ जो ड्राईवर थे वे कहते हैं कि यह सब कुछ हो गया। जब डाकू हमें लूट कर चले गए तो हम हिम्मत कर के उठे। फ़ौरन गाड़ी की तरफ़ आए कि देखें तालेअ का क्या हाल है तो देखा कि उसके भी कमर पर दाएं तरफ़ गोली लगी हुई थी और अंदर धँस गई थी जिसके नतीजा में गाड़ी में ही बहुत सारा ख़ून बह गया था। मैडीकल रिपोर्ट के अनुसार यही जान-लेवा भी साबित हुआ।

बहरहाल घटनाके बाद उन्हें एक गुज़रती बस के से buipe पोली क्लीनिक पहुंचाया गया। वहां कुछ थोड़ी सी treatment हुई। फिर वहां से टमाले टीचिंग हस्पताल ले जाने का फ़ैसला हुआ लेकिन रास्ते में ही उनकी वफ़ात हो गई और हस्पताल जा कर उन्होंने डिकलेयर किया कि वफ़ात तो हो चुकी है। उमर फ़ारूक़ साहिब कहते हैं कि तालेअ का सिर मेरी रान पर था और वह बार-बार मुझ से यही पूछते थे क्या हुज़ूर को हमारे इस वाक़िया की सूचना हो गई है? दुआ के लिए कह दिया है? कहते हैं हम पर इस घटना का शदीद असर था और बेशुमार अंदेशे और ख़ौफ़ थे जो हमें भयभीत कर रहे थे। कहते हैं सय्यद तालेअ ने इस दौरान में जब हम हस्पताल ले के जा रहे थे यह भी उन्हें बताया कि दौरान फायरिंग उन्होंने फ़ौरी तौर पर लैपटॉप और दूसरी चीज़ों को पिछली सीटों के नीचे धकेल दिया है जो वहां महफ़ूज़ हैं वहां से निकाल लेना। फिर उन्होंने मुझ से कैमरे और फ़ोन और लैपटॉप इत्यादि के बारे में पूछा कि क्या सब महफ़ूज़ है? क्योंकि उन्हें फ़िक्र थी कि सब रिकार्ड ज़ाए न हो जाए। मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सब सम्बंधित सामान महफ़ूज़ है।

उसे चिंता थी तो जमाअती वस्तुओ और अम्वाल की और जो मेहनत की थी जमाअती तारीख़ को महफ़ूज़ करने की उसकी हिफ़ाज़त की। बहरहाल कहते हैं कि नौ, साढ़े नौ बजे के क़रीब उसकी हालत बिगड़नी शुरू हुई जिसकी वजह से पोली क्लीनिक वालों ने फ़ैसला किया कि फ़ौरी तौर पर किसी हस्पताल स्थानांतरित किया जाए जैसा कि मैंने कहा कि टमाले हस्पताल ले जा रहे थे तो रास्ते में ही उनकी वफ़ात हो गई। एम्बूलैंस में कुछ ज़रूरी चीज़ें भी मौजूद नहीं थीं और उन मुल्कों में कुछ दफ़ा यही हालात होते हैं। एक तो शुरू में एम्बूलैंस मिलने की वजह से देर भी हो गई और फिर ब्लीडिंग भी बहुत ज़्यादा हो रही थी तो बहरहाल आख़िर वही हुआ जो अल्लाह तआला की तक़दीर थी। उमर फ़ारूक़ साहिब कहते हैं इस दौरान में जबकि हम घायल यात्रा कर रहे थे तालेअ ने मुझसे कहा कि Tell huzur that I love him and tell my family that I love them.

उमर फ़ारूक़ साहिब कहते हैं कि थोड़ी सी होश आती थी तो फिर यही बात दोहराते थे और ऐसा कई मर्तबा हुआ। यह एक दफ़ा नहीं कहा, कई मर्तबा हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि आप लोगों ने हमारा बहुत ज़्यादा ख़्याल रखा है और हर सम्भव मदद की है जिसके लिए मैं आपका दिल से धन्यवादी हूँ। मैंने उनका हौसला बुलंद किया लेकिन अब उनकी हिम्मत उत्तर देती जा रही थी और यह हालत थी कि मैं जब सवाल करता तो बोलने की बजाय अपने हाथ की मुट्ठी बंद कर के अँगूठा ऊपर कर के इशारा करते कि सब ठीक है जिसकी वजह से मुझे घबराहट हो रही थी। फिर उनकी सांस में तेज़ी आई और एक लंबी ख़ामोशी हो गई और मैं समझ गया कि जो हम नहीं चाहते थे वह हो गया है। कहते हैं नर्स (male nurse) और ड्राईवर आपस में लोकल भाषा में बातें कर रहे थे जिससे मुझे अंदाज़ा हो रहा था कि वह हमें बताना नहीं चाहते लेकिन सय्यद तालेअ अहमद की वफ़ात हो चुकी है और बहरहाल जैसा कि मैंने कहा जब टमाले पहुंचे तो एक बज के उनचास मिनट पर उनकी वफ़ात का ऐलान हुआ, हस्पताल वालों ने डिकलेयर किया। कहते हैं इस ख़बर की वजह से टमाले के सब लोग जो थे बहुत अफ़्सुर्दा हो गए क्योंकि थोड़ी देर पहले ही उनको हँसता खेलता उन्होंने विदा किया था। तो बहरहाल यह तो इस की शहादत के वाक़िया की कुछ तफ़सील थी।

एक हीरा था जो हमसे जुदा हो गया। अल्लाह तआला ऐसे वफ़ा करने वाले, ख़िलाफ़त से इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध रखने वाले और दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले जमाअत को अता फ़रमाता रहे लेकिन इस का नुक़्सान ऐसा है जिसने हिला के रख दिया है। वह प्यारा वजूद वक़्फ़ की रूह को समझने वाला और इस अह्द को हक़ीक़ी रंग में निभाने वाला था जो उसने किया था। मुझे हैरत होती थी उसे देखकर और अब तक होती है कि किस तरह इस दुनियावी माहौल में पलने वाले बच्चे ने अपने वक़्फ़ को समझा और फिर उसे निभाया और ऐसा निभाया कि इस के मयार को इंतिहा तक पहुंचा दिया। वह बुज़ुर्गों के वाक़ियात पढ़ता था इसलिए नहीं कि तारीख़ से आगाही हासिल करे और उनकी क़ुर्बानियों पर केवल हैरत का प्रकटन करे बल्कि इसलिए कि उसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाए।

ख़िलाफ़त से वफ़ा और इख़लास का ऐसा इदराक था कि कम देखने में आता है। बल्कि मैं कहूँगा कि ऐसा था जिसे कुछ दीन का गहिरा इलम रखने वाले भी नहीं समझते, कुछ दफ़ा ऐसे लोगों का इलम उनमें तकब्बुर की बू पैदा कर देता है। बल्कि मैं कहूं गा कि कुछ वे भी नहीं समझते जिनका ख़्याल है कि हम ख़िलाफ़त के स्थान और इस के वफ़ा के मयार को समझते हैं। उसने ख़िलाफ़त से वफ़ा की और ऐसी वफ़ा की कि अपने अंतिम शब्द में जबकि वह मौत-ओ-हयात की हालत में था उसे ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार और वफ़ा का ही ख़्याल था। अपने बच्चों और अपनी फ़ैमिली का सबको ख़्याल आता है लेकिन हर दफ़ा बार-बार अपने बच्चों से, फ़ैमिली से पहले या साथ, ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार के प्रकटन का शायद ही किसी को ख़्याल आता हो।

शायद दो तीन वर्ष पहले उसने एक नज़म लिखी थी जो उसने अपने किसी दोस्त को दी थी कि अपने पास रख लो और किसी को नहीं दिखानी, जो ख़िलाफ़त से सम्बन्ध और प्यार के विषय में लिखी हुई थी और उसने शुरू ही इस तरह किया था कि मैं ख़लीफ़-ए-वक़्त से सबसे अधिक प्यार करता हूँ और ख़त्म इस तरह किया था कि ख़लीफ़-ए-वक़्त से जो मुझे प्यार है और मुहब्बत है वह उन्हें कभी पता नहीं चलेगी। लेकिन हे प्यारे तालेअ मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हारे इन अंतिम शब्द से पहले भी मुझे पता था कि तुम्हें ख़िलाफ़त से प्यार और मुहब्बत का सम्बन्ध था। तुम्हारे हर अमल से, हर हरकत-ओ-सुकून से, जब तुम्हारे हाथ में कैमरा होता था और मैं सामने होता था तब भी और जब तुम कैमरे के अतिरिक्त मिलते थे, चाहे ज़ाती मुलाक़ात हो या दफ़्तर के काम से, तुम्हारी आँखों की चमक से इस मुहब्बत का प्रकटन होता था। तुम्हारे चेहरे की एक अजीब किस्म की रौनक से इस मुहब्बत का प्रकटन होता था। उद्देश्य कि हर तरह तुम्हारे हर अमल से यह लग रहा होता था कि किस तरह तुम इस मुहब्बत का प्रकटन करो जो तुम्हें ख़लीफ़-ए-वक़्त से है। मुझे शायद ही किसी में इस मुहब्बत का प्रकटन नज़र आता हो और घर में मैं वर्णन कर रहा था कि अब ख़ानदान में नौजवानों में तो मुझे ऐसा प्रकटन किसी में नज़र नहीं आता। दिलों का हाल अल्लाह तआला जानता है बल्कि बड़ों में भी शायद चंद एक में ही हो। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इस हादसे के बाद बहुत से इस मयार के पैदा कर दे।

तालेअ का वजूद जैसा कि उसने अपनी नज़म में वर्णन किया है ऐसा था कि वह इस मुहब्बत का प्रकटन नहीं करना चाहता था बल्कि छुपाना चाहता था लेकिन नहीं छुपती थी। अल्लाह तआला किसी न किसी रंग में इस सम्बन्ध का प्रकटन करवा देता था इसलिए वह मुझे बहुत प्यारा था। हर वक़्त इस फ़िक्र में रहता था कि कब ख़लीफ़ा वक़्त के मुँह से कोई बात निकले और मैं उस पर अमल करूँ और केवल ख़ुद ही अमल न करूँ बल्कि कब और किस तरह मैं ख़िलाफ़त के स्थान के बारे में दुनिया को बताऊं। कब ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त के लिए जान की क़ुर्बानी भी देनी पड़े तो जान का नज़राना भी पेश कर दूं। फिर अपने काम से ऐसा इशक़ कि कम-कम ही देखने में आते हैं।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

केवल इसलिए ही अपने काम से इशक़ नहीं था कि अपने काम को बहुत पसंद करता था और लोग बहुत सारे ऐसे हैं जो पसंद करते हैं। उनको भी अपने काम से बहुत इशक़ और लगाओ होता है। इस को अपने काम से यदि लगाओ था तो इसलिए कि इस के माध्यम से मैं इस्लाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन की रक्षा करूँगा, इसलिए कि यह पैग़ाम मैं दुनिया को पहुंचाऊंगा। इसलिए कि मेरा काम है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊं। इसलिए कि मैंने ख़लीफ़ा वक़्त का मददगार बनना है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह तआला की तदफ़ीन के वक़्त जब मैं मिट्टी डालने से पहले क़ब्र के सिरहाने पर खड़ा था तो मेरे दाएं तरफ़ आ के खड़ा हो गया। मैं नहीं जानता था कि यह कौन खड़ा है। अब तस्वीर देखी है तो फिर मुझे अंदाज़ा हुआ है कि कौन था और क्या अवसर था लेकिन इस तेराह वर्ष के बच्चे ने शायद उस वक़्त यह अहद किया था कि मैं वक़्फ़ नौ हूँ और अब मैंने ख़लीफ़ा वक़्त का मददगार बनना है, सहायक बनना है और फिर उसने वर्षों बाद अपनी तालीम मुकम्मल कर के इस अहद को पूरा किया और निभाया और ख़ूब निभाया। जर्नलिज़म में भी उसने मेरे मश्वरे से दाख़िला लिया था और फिर तालीम मुकम्मल की और शहीद हो कर बता गया कि मैं ख़िलाफ़त का हक़ीक़ी मददगार बना हूँ।

हे तालेअ! मैं गवाही देता हूँ कि निसंदेह तुमने अपने वक़्फ़ और अहद की उच्च श्रेणी को हासिल कर लिया है।

किस-किस तरह वह ख़लीफ़-ए-वक़्त के शब्द पर अमल करने की कोशिश करता था उस का अंदाज़ा इस से होजाता है कि मैंने कुछ मीटिंगज़ में जो मुरब्बियान के साथ थीं उन्हें कहा कि मुरब्बियान को कोशिश करनी चाहिए कि कम-ओ-बेश एक घंटे के क़रीब तहज्जुद पढ़ा करें तो अज़ीज़ तालेअ ने कुछ मुरब्बियान की तरह यह सवाल नहीं किया कि गरमियों की छोटी रातों मैं किस तरह इतनी जल्दी जाग कर एक घंटे के क़रीब तहज्जुद पढ़ सकते हैं बल्कि उसने अमल करने की कोशिश की। इस के एक दोस्त मुरब्बी ने एक दिन उसे बड़ा थका हुआ देखा तो वजह पूछी तो उसने बताया कि ख़लीफ़-ए-वक़्त ने मुरब्बियान को एक घंटे के क़रीब तहज्जुद पढ़ने को कहा है। मैं भी तो वक़्फ़ हूँ तो यह आदेश मेरे लिए भी है। आज तहज्जुद की वजह से पूरी तरह सो नहीं सका इसलिए थकावट लग रही है। इस मुरब्बी ने मुझे लिखा कि इस की बात ने मुझे सख़्त शर्मिंदा किया कि मैं बराह-ए-रस्त सम्बोधित था और मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त की बात पर इस तरह अमल नहीं किया और उसने महिज़ एक वाक़िफ़ ज़िंदगी के अहद को निभाने के लिए इस पर अमल किया है। यह था उस का अहद निभाने का मयार। अत: वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी के लिए भी वह एक उदाहरण था और ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का फ़र्द होने की हैसियत से ख़ानदान के अफ़राद के लिए भी वह वफ़ा और इख़लास का एक उदाहरण क़ायम कर गया। अब ये अफ़राद ख़ानदान पर मुनहसिर है कि किस हद तक वे इस उदाहरण पर अमल कर के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मंसूब होने का हक़ अदा करते हैं। ख़ानदान की इज़्ज़त या जस्मानी रिश्तेदारी से कोई स्थान नहीं मिलता। यदि कोई उनकी इज़्ज़त करता है तो उनकी दुनिया-दारी की वजह से नहीं है और न कभी होगी। हक़ीक़ी इज़्ज़त इस में है कि दीन के ख़ादिम हों और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले हों अन्यथा दुनिया-दारों में तो करोड़ों लोग माली लिहाज़ से उनसे बेहतर हैं और जो दुनियावी लिहाज़ से बेहतर नहीं उनके नज़दीक भी उनकी कोई इज़्ज़त नहीं है। अत: मै ख़ानदान के अफ़राद से भी कहता हूँ कि इस जाने वाले से नसीहत हासिल करें और इख़लास और वफ़ा में बढ़ें और जिस तरह इस वफ़ा के पैकर ने अपना अहद निभाया और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम किया बाक़ी अफ़राद ख़ानदान भी इस उदाहरण को देखें और यही चीज़ इज़्ज़त दिलाने वाली और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल को हासिल करने वाली है अन्यथा दुनियादारी और दुनियावी इच्छात अफ़राद-ए-ख़ानदान को मामूली सी भी इज़्ज़त नहीं दिला सकतीं। यदि अपने अमल सही नहीं हैं तो किसी बुज़ुर्ग का बेटा होना या किसी बुज़ुर्ग की बेटी होना कोई फ़ख़र का स्थान नहीं है।

जैसा कि मैंने कहा कि वाकफ़ीन ज़िंदगी के लिए भी हैरत अंगेज़ उदाहरण था। कभी शिकवा नहीं किया था कि अलाउंस थोड़ा है, गुज़ारा नहीं होता। जो मिलता था उस में शुक्र कर के गुज़ारा करता। यदि कहीं से कोई ज़ाइद आमद हो जाती तो शुक्रगुज़ारी के जज़बात से लबरेज़ होता। अल्लाह तआला से उसने दुआ की कि अल्लाह तआला कभी मुझे तंगी न देना और फिर अल्लाह तआला ने भी कभी तंगी नहीं दी। बाक़ायदा रोज़े रखने वाला था। इस में बेशुमार खूबियां थीं। कुछ लोग जो क़रीबी दोस्त थे, अज़ीज़ थे ,जो मुझे अफ़सोस के ख़त लिख रहे हैं वे उस की बेशुमार खूबियां वर्णन कर रहे हैं। ऐसी ऐसी खूबियां जो मेरे लिए भी हैरत-अंगेज़ हैं। मैं इस की वफ़ा को तो कुछ हद तक जानता था लेकिन उस की नेकी और तक़्वा के मयार भी बहुत ऊंचे थे। इसलिए मुनासिब है कि मैं उस की जीवनी के बारे में लोगों के शब्द में ही कुछ बातें आपके सामने रख दूं जिसमें उस की बीवी और माता पिता और भाई बहनों और दोस्तों के जज़बात हैं और कुछ हक़ायक़ और वाक़ियात हैं।

आमिर सफ़ीर साहिब रिव्यू आफ़ रिलीजन के ऐडीटर कहते हैं चार वर्ष तक तालेअ ने रिव्यू में काम किया, इंडेक्सिंग डिपार्टमैंट में बतौर आरकाव एडिटर प्राजैक्ट में बतौर निगरान ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी थी जो उसने सरअंजाम दी। रिव्यू आफ़ रिलीजन के सौ वर्ष से ज़ाइद अरसा का इंडैक्स तैयार करना, कैटेगरीज़ (categaries) की फ़हरिस्त तैयार करना, अलग अलग मौज़ूआत पर मज़ामीन को तर्तीब देना एक बहुत वसीअ काम था जिस पर उन्होंने बड़ी मेहनत से और लगन से काम किया। ग्यारह अफ़राद पर मुश्तमिल यह टीम थी। बहुत मेहनत-तलब काम था और अल्लाह के फ़ज़ल से सब ने इस काम को सरअंजाम दिया जिसकी निगरानी तालेअ ने की। फिर कहते हैं मैंने अपनी आँखों से देखा कि तालेअ बहुत सारी सलाहियतों के मालिक थे। तंज़ीमी काम उम्दगी से बजा लाते थे। ख़िदमत का बहुत ज़्यादा जज़बा और लगन थी। ख़िलाफ़त से बेपनाह वफ़ादारी और प्यार था। फिर कहते हैं एक ख़ूबी जिसका मैंने तालेअ में मुशाहिदा किया वह यह है कि वह किसी प्राजैक्ट को ग्रांऊड ज़ीरो से शुरू कर के एक जज़बा और शौक़ के साथ काबले फ़ख़र चीज़ बना देते थे। कभी इस बात का इंतिज़ार नहीं करते थे कि कोई प्रशासन उन्हें काम करने की तरग़ीब दे या उन्हें याददेहानी करवाए। एक जुनूनी आदमी की तरह आगे बढ़के काम करते। यह उन लोगों में से थे जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह जुनून की हद तक अज़म और इख़लास के जज़बा से दीन का काम करते हैं। तालेअ को दुनिया की पर्वा नहीं थी। जब भी जमाअत और ख़िलाफ़त के लिए उसे ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिलती तो केवल यही उस के लिए सब कुछ था। फिर कहते हैं कि जो कुछ मैंने देखा उस का ख़ुलासा यह है कि इस का सब कुछ ख़िलाफ़त के गर्द घूमता था। ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ अपना एक ज़ाती सम्बन्ध था लेकिन जब कभी मैं उसे आपकी कोई हिदायत पहुँचाता तो जमे हुए की तरह खड़ा हो जाता और आँखें खुली की खुली रह जातीं जैसे बच्चा candy की तरफ़ देखता है और फिर आपकी हिदायत पहुंचाने के लिए मेरा शुक्रिया भी अदा करता। फिर कहते हैं एक डाकोमैंटरी के बजाय दो दो डाकोमैंटरीज़ पर काम करता और मैं बहुत हैरान होता था कि दो डाकोमैंटरीज़ पर साथ साथ किस तरह काम कर लेता है। कभी कबार हमें पता ही नहीं होता था कि तालेअ किस डाकोमैंटरी पर काम कर रहा है। हमें सरप्राइज़ देना चाहता था। तालेअ की तहक़ीक़ करने की सलाहियत भी बहुत आला थी।

एक और अहम ख़ूबी जो तालेअ में पाई जाती थी वह यह थी कि हमेशा अपनी फ़ैमिली और रिश्तेदारों को जमाअत से जोड़ें और जमाअत की ख़िदमत करते देखना चाहता था। जब मैं उसे बताता कि अमुक रिश्तेदार ने रिव्यू में अमुक सिलसिले में यह ख़िदमत की है या कर रहा है तो बहुत ख़ुश होता था।

क़ुद्दूस आरिफ़ साहिब सदर खुद्दामुल अहमदिया कहते हैं कि बचपन से ही मेरा उस के साथ सम्बन्ध था। कहते हैं मैंने मुशाहिदा किया है कि तालेअ ने हज़रत मलिक ग़ुलाम फ़रीद साहिब की शॉर्ट कमैंटरी (Short commentary) में निशान लगाए हुए थे और फाईव वालीम कमैंटरी (Five volume commentary) भी उसने बड़ी तफ़सील से पढ़ी थी और मुख़्तलिफ़ आयात हाई लाईट की थीं और चिटें लगाई हुई थीं।

फाईव वोलियम कमैंटरी जो उसने पढ़ी है इस की तफ़सील भी मैं बता दूं। बी एस सी करने के बाद उसने एक वर्ष गैप यर (gap year) लिया तो उस वक़्त मैंने उसे वक़्फ़ नौ की क्लास में कहा था और इसके बाद शायद दफ़्तर में मुलाक़ात में भी कि फाईव वोलियम कमैंटरी पढ़ो और मेरा ख़्याल था कि चंद वर्ष लगाएगा लेकिन चंद महीनों के बाद ही आकर उसने मुझे बताया कि मैंने समस्त पढ़ ली है। हैरत हुई थी मुझे उस वक़्त भी यह सुनके। इसी तरह वह ऐसी डाकोमैंटरीज़ भी प्रोड्यूस करता जो नौजवानों को पसंद हों। उदाहरण के लिए फुटबॉल के बारे में डाकोमैंटरी बनाई जिसमें तरबियती पहलू को दृष्टिगत रखा।

फिर कहते हैं कि एम.टी.ए पर प्रोड्यूस करदा डाकोमैंटरीज़ एक से एक बढ़के है। कहते हैं मुझे याद है कि जब brutality and injustice: Two

trials in a time प्रसारित हुआ तो ख़ाकसार ने तालेअ को मैसिज भेजा कि डाकोमैंटरी बहुत ही ईमान अफ़रोज़ थी। उसने बड़ी आजिज़ी से यही उत्तर दिया कि हमें दुआओं में याद रखना, यह सब अल्लाह का फ़ज़ल है। ट्वीटर पर किसी ने डाकोमैंटरी के नाम पर एतराज़ किया तो इस पर तालेअ ने इस का उत्तर दिया। कहते हैं मैंने उसे कहा तो उसने कहा कि चूँकि यह नाम ख़लीफ़-ए-वक़्त ने ख़ुद मंज़ूर किया था इसलिए मैंने उस को डीफेनड किया है। यदि आबिद या मेरी तरफ़ से यह नाम होता तो मैं कभी कुछ नहीं कहता लेकिन ख़लीफ़-ए-वक़्त ने उसे मंज़ूर किया है तो इसलिए मैंने, बहरहाल उस की वज़ाहत करनी है और दिफ़ा करना है। फिर कहते हैं पिछले वर्ष वर्चूअल अतफ़ाल रैली पर ख़ाकसार ने मुहतमिम इतफ़ाल के माध्यम से तालेअ से दरख़ास्त की कि वह अपने कुछ वाक़ियात जो आपके साथ, ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ हैं, पेश करे। पहले तो राज़ी नहीं हुआ फिर जब उस को सदर मज्लिस की हैसियत से कहा तो राज़ी हो गया और यह वाक़ियात भी बहरहाल लोगों को बड़ी पसंद आईं। अतफ़ाल ने इस को बड़ा पसंद किया। उसने फिर सदर खुद्दामुल अहमदिया को मैसिज किया कि मैं समझता था कि मेरी अभी इस्लाह नहीं हुई कि लोगों को नसीहत करूँ और वाक़ियात सुनाऊँ। मेरा इरादा था कि जब मेरी इस्लाह हो जाए या मैं बुढ़ापे में मौत के क़रीब हूँ तो उस वक़्त यह वाक़ियात बताऊँगा और उस वक़्त तक यही मेरा ख़्याल था कि ख़ामोशी से वक़्त गुज़ारूँगा लेकिन तुमने मुझ से यह कहलवा दिया। लेकिन अल्लाह तआला को पता था कि अब वह वक़्त है कि वह ये वाक़ियात शेयर करे।

उनकी पत्नी अज़ीज़ा सतवत कहती हैं। बहुत प्यार करने वाला था। बहुत शफ़क़त का सुलूक करने वाला था बच्चों के साथ भी मेरे साथ भी। बड़ा शफ़क़त का प्रकटन था। हर छोटी से छोटी चीज़ को appreciate करता था। खाना चाहे जैसा भी हो उस को पसंद करता था। कहती हैं मेरे पिता की शहादत के बाद जल्दी engagement भी हो गई, मंगनी भी हो गई तो मैं ज़रा परेशान रहती थी। कहती हैं मुझे बाप के न होने की वजह से उदासी भी बहुत थी लेकिन रिश्ता के बाद तालेअ ने मेरा बहुत ख़्याल रखा और मुझे महसूस नहीं होने दिया। कहती है जब मेरी मंगनी हो गई तो मैं सोचती थी कि इस को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कितनी मुहब्बत है। वैसे तो जवान था लेकिन बच्चों की तरह रोता था जब आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात करता था। बेटे तलाल को भी आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कहानियां सुनाता तो हिचकियाँ लेकर रोता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बहुत कहानियां पता थीं, वाक़ियात रटे हुए थे। इस बारे में भी औरों ने भी बहुत सारा लिखा है कि इस को तारीख़ का भी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत का भी बड़ा गहिरा इलम था। कहती है कि मुझे कहता था कि तलाल का एक क्रिस्चन स्कूल है। जब मैं स्कूल जाता हूँ तो रास्ते में उसे सूरा इख़लास दोहराता जाता हूँ कि तुम मेरे पीछे दोहराते जाओ।

ख़िलाफ़त से मुहब्बत भी बहुत थी और इस की बहुत ग़ैरत भी थी। कुछ छोटी-छोटी बातें होती हैं लेकिन इख़लास का पता देती हैं। कहती हैं कि इतना ख़ुश होता था जब उस को यह लगता था कि आप उस से ख़ुश हैं या उस के बेटे से ख़ुश हैं। हमेशा मुलाक़ात के बाद ट्रीट दिया करता था या तलाल को चॉकलेट देता था कि बड़े अच्छे बच्चे बन के तुम रहे हो या हमें आइसक्रीम इत्यादि खिलाने ले जाता। इस बात पर ख़ुश होता था कि ख़लीफ़ा वक़्त के सामने आज तुमने अच्छा behave किया है और या हमारी मुलाक़ात बहुत अच्छी हुई है। छोटी छोटी बातें हैं। कहती हैं कि कई दफ़ा उस को यह ख़्याल होता था कि मैंने किसी बात को नापसंद किया है। यह ख़्याल ही होता होगा, मुझे नहीं याद कि कभी ऐसा कोई वाक़िया हुआ हो। तो कहती हैं कि मुझे याद है कि जब कभी यह ख़्याल उस को हुआ कि ख़लीफ़ा वक़्त ने किसी बात को नापसंद किया है तो तहज्जुद में रो-रो के अल्लाह तआला से माफियां मांगा करता था और बच्चों की तरह बिलक बिलक के रोता था और यही उस को डाकोमैंटरीज़ बनाने के बाद फ़िक्र होती थी कि ख़लीफ़-ए-वक़्त की तरफ़ से इस की मंज़ूरी आ जाए और this week वाला प्रोग्राम भी जब उसने शुरू किया तो बहुत ख़ुश था कि इस की वजह से उस को अवसर मिल रहा है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा मेरे दफ़्तर में आ के मेरे से रिकार्डिंग कर सके। फिर यह कहती हैं कि इस में बहुत बड़ी ख़ूबी यह थी कि उसने अपने दीन को दुनिया से पहले रखा।

बिल्कुल ग़ैर माद्दियत पसंद था। कभी उसने किसी चीज़ की इच्छा नहीं की। कभी उस के दिल में material चीज़ों के लिए लालच नहीं थी। कभी उस को दुनिया की चीज़ों में दिलचस्पी नहीं थी। कोई उस को महंगा तोहफ़ा दे देता तो घबरा जाता था कि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ आ गई है। अल्लाह तआला का बहुत शुक्र करता था कि जो भी उस को दिया है उसी पर वह ख़ुश था और जो कुछ उस के पास था इस पर वह संतुष्ट था। कहता था कि बचपन में हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो का एक वाक़िया पढ़ा था कि उनके साथ माली मामलात में कैसा सुलूक होता था तो कहता था कि मैंने फ़ौरन पढ़ कर अल्लाह मियां से दुआ की कि अल्लाह तआला तू ने मुझे भी इसी तरह ट्रीट करना है और उस को पक्का यक़ीन था कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़बूल कर ली है और हमेशा मेरे साथ अल्लाह तआला का हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह का सुलूक होगा और यह घटना सच्च है। कहती है मैंने यह ख़ुद देखा है कि जब किसी चीज़ की ज़रूरत होती थी तो अचानक उस के पास पैसे आ जाते थे। कहती हैं अभी हाल ही में दस वर्ष बाद एक लोन (loan) कंपनी ने उस को फ़ोन किया कि हमारे पास तुम्हारा एक हज़ार पाऊंड है। इस को इतनी ख़ुशी थी कि मैं अपनी गाड़ी की इंशोरंस pay कर सकता हूँ और गाड़ी की maintenance की जो ज़रूरत है वह पूरी कर सकता हूँ। यह नहीं कि अब मैं जमाअत से लूं।

कहती हैं कि अल्लाह तआला से इस का प्यार का सुलूक मैंने ख़ुद भी देखा है। उन्होंने एक तो सुलूक का वाक़िया वर्णन किया है लेकिन वह अपना वाक़िया भी वर्णन करता है कि जब मैं यूनीवर्सिटी में स्टूडैंट था जो तक़रीबन दस वर्ष पुरानी बात है। कहता है एक दफ़ा मुझे सख़्त भूक लगी और मेरे पास पैसे नहीं थे। बिल्कुल ख़त्म हो गए थे पैसे। मैंने नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेरा तो देखा कि बिस्तर के नीचे दस पाऊंड पड़े हुए थे। कहता था कि मैं हैरान था कि अल्लाह तआला ने यह पैसे मुझे भेजे हैं।

इस में विश्वास भी बहुत था। मैंने कहा कि लोग कुछ कर लेते हैं माली लिहाज़ से तैयारी इत्यादि लेकिन इस को यक़ीन था कि अल्लाह तआला मेरे लिए रिज़्क़ मुहय्या कर देगा। इसलिए मुझे बिना वजह दुनिया के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं है। मैं अपना वक़्फ़ निभाऊं। फिर यह कहती हैं कि जब हम पहले किराए के घर में थे हमारा tenancy agreement ख़त्म हुआ और कौंसल बिल, बिजली के बलख़ इत्यादि के बारे में कौंसल ने लिखा कि तुम्हारे एकाऊंट में कुछ ज़्यादा पैसे हैं, दो सौ तीन सौ पाऊंड हैं, तो फ़ौरन उसने कहा मैं जमाअत को वापस करूँगा हालाँकि जमाअत ने कभी यह नहीं कहा था कि इस तुम strictly फॉलो करो और पैसे वापस करो लेकिन उसने बर्दाश्त नहीं किया। उसने कहा यह मैंने जमाअत को वापस करने हैं और कहा कि जमाअत पर बोझ नहीं बनना। वह कहा करता था कि यदि हो सकता तो यह सब मुफ़्त मैं करता और कभी उस को पसंद नहीं था कि जमाअत पर बोझ बने या जमाअत से कोई चीज़ भी request करे। आख़िर में भी इस को यही फ़िक्र थी कि जमाअत का में इतना महंगा सामान लेकर अफ़्रीक़ा जा रहा हूँ किस तरह ख़्याल रखूँगा और इस को अपनी कोई पर्वा नहीं थी।

मेहमान नवाज़ बहुत था। अपनी फ़ैमिली और मेरी फ़ैमिली का हमेशा ख़्याल रखा करता था। सादा कपड़े हमेशा होते थे। कहती हैं कि मुझे लगता है कि कुछ लोग उस को misunderstand करते थे या समझते थे कि शायद इस में तकब्बुर है या मुँह-फुट है लेकिन वह तो ऐसा confident था वह प्यार से ऐसी बातें कर जाया करता था। तकब्बुर उनमें बिल्कुल नाम को भी नहीं था। तालेअ बहुत माफ़ करने वाला था और हर किसी की पर्दापोशी करता था और कभी किसी के ख़िलाफ़ दिल में बात नहीं रखता था।

उनके पिता लिखते हैं कि अलहम्दो लिल्लाह, अल्लाह तआला ने हमारे बेटे को विशेष फ़ज़ल-ओ-करम के साथ शहादत के लिए चुन लिया। कहते हैं यह एक स्वप्न की बिना पर मैंने ज़हनी तौर पर अपनी बेगम को और तालेअ को तैयार करना शुरू किया और जब तालेअ को यह स्वप्न सुनाई तो उसने कहा कि क्या आपने स्वप्न देखी है कि आप शहीद हो गए हैं? कहते हैं मैं बड़ा हैरान हुआ। उस से पूछा तुम्हें किस तरह पता लगा? उसने कहा मैंने भी यह स्वप्न देखी है कि आप शहीद हो गए हैं। तो बहरहाल यह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने एक बेटे को अपने बाप से जिस क़द्र-ए-मोहब्बत की इजाज़त दी है, तालेअ इस इशक़-ओ-अक़ीदत की हद को पहुंचा हुआ था और मेरा ख़्याल है कि इसी वजह से उसने यह दुआ की होगी कि बाप की शहादत की बजाय उसे शहादत का दर्जा मिले और क्योंकि वह इस स्थान का था कि अल्लाह तआला उसे शहादत का दर्जा दे इसलिए अल्लाह तआला ने उसे ही शहादत दी और उसने गोली लगने के बाद मिशनरी साहिब को यह भी कहा था कि चाहे में ज़िंदा रहूं या मर जाऊं मैंने अपना मिशन मुकम्मल कर लिया है।

कहते हैं कि बचपन से ही अल्लाह तआला ने इस के दिल में फूंक दिया था कि मैंने तुझे एक ख़ानदान में पैदा तो कर दिया है अब उस की ज़िम्मेदारी को भी समझना और इस ज़िम्मेदारी को निभाना और जान लो कि तुम्हारी ज़िंदगी अब तुम्हारी नहीं है। यह मेरी है और केवल मेरे आदेश पर चल कर तुमने यह सारी ज़िंदगी गुज़ारनी है। कहते हैं कि तालेअ ने अपनी ज़िंदगी और अपनी मौत से यह मोहर कर दी कि उसने ज़िम्मेदारी का हक़ अदा कर दिया है। फिर कहते हैं कि ऐसा नफ़्स था जिसके दिल में कूट कूट कर अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत और अपने प्यारों की मुहब्बत भरी हुई थी। एक ऐसा दिल था कि बचपन से ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम और वर्णन पर उस के मासूम होंठ लरज़ते थे और आँखों में आँसू आ जाते थे। एक पाक-बाज़ नफ़्स जिसमें किसी बुराई का संदेह भी नहीं था। ज़ाहिरी-ओ-बातिनी ख़ूबसूरती भी थी और समानता देनी है तो कहते हैं मैं हज़रत यूसुफ़ से समानता देता हूँ, किरदार में भी इसी तरह पुख़्ता था। उस की रूह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में चौदह सौ वर्ष क़बल की मक्का और मदीना की गलियों में फिरती थी और उस का जिस्म पैकर-ए-इशक़ था। उस का ओढ़ना बिछौना, खाना पीना, सांस लेना सब ख़लीफ़तुल मसीह के लिए था।

उनके माता अम्तुल शकूर साहिबा लिखती हैं कि बहुत ख़ुश-क़िस्मत और ख़ुशनसीब हूँ कि अल्लाह तआला ने मुझे एक महान बच्चे से नवाज़ा। तालेअ के साथ इकत्तीस वर्ष ज़िंदगी दुनिया की सबसे बड़ी नेअमतों में से एक है। फिर उन्होंने किसी महिला की स्वप्न का वर्णन किया है कि उन्होंने देखा था कि एक बच्चा झूले में है और इस के हाथ बासकिट से बाहर आ रहे हैं। वह कहती है कि उन्होंने बच्चे को अस्सलामो अलैकुम कहते हुए सुना। इस के साथ एक नीले रंग का कार्ड था जिस पर अरबी में "अल्लाह" लिखा हुआ था और साथ में अंग्रेज़ी में god वो बताती थीं कि मेरा ख़्याल है कि नीले रंग से मुराद लड़का है। यह तालेअ की पैदाइश से पहले किसी महिला ने स्वप्न देखा और उनको बताया था। उन्होंने स्वप्न ज़ाहिर किया कि तुम्हारे हाँ लड़का पैदा होगा और जहां जहाँ यह लड़का जाएगा अमन और सलामती फैलाएगा।

बहरहाल कहती हैं अल्लाह तआला ने मुझे ख़ूबसूरत और प्यारे बच्चे से नवाज़ा और कहती हैं कि हम दोनों ने जब यह पंद्रह वर्ष की आयु का था तो 2005 ई. में हम दोनों ने इकट्ठे वसीयत की थी। दीन के मामलात में बहुत होशयार था। कहती हैं तीन वर्ष की आयु में उसने क़ुरआन-ए-करीम की कुछ सूरतें याद करली थीं। अपनी माता को बताया तो बड़ी हैरान हुईं। फिर कहती हैं यह भी मुझे याद है कि तीन वर्ष की आयु में मैं तब्लीग़ की बातें इस से शेयर किया करती थी और बड़ी संजीदगी से वह बातें मेरे साथ शेयर करता था या बताता था, discuss करता था। पढ़ाई में भी बहुत अच्छा था। बड़े अच्छे नंबर लेता था। कहती हैं मेरी इच्छा तो यह थी कि डाक्टर बने लेकिन अल्लाह तआला का कुछ और plan था। बायो मैडीकल साईंसिज़ की इबतिदाई तालीम मुकम्मल करने के बाद अल्लाह तआला ने उसे जर्नलिज़म में मास्टर्ज़ की तौफ़ीक़ दी। कहती हैं कि बेटे के इंतिक़ाल के बाद मुझे इस बात का पहले से ज़्यादा एहसास हुआ है कि उसे आपके साथ किस क़द्र मोहब्बत थी। कहती हैं आपने जब उसे एम.टी. ए के लिए तारीख़ी डाकोमैंटरीज़ बनाने का काम दिया तो यह भी हिदायत दी थी कि तुम independent हो कर काम सरअंजाम दो और वह इस बात से बड़ा मुतास्सिर था, inspired था। कहती हैं उनकी पत्नी सतवत ने मुझे बताया कि 2019 ई. में उसने उसे, सतवत को ईमेल पर आठ प्रोग्रामों के बारे में एक plan भेजा और जिसमें साथ लिखा कि यदि मुझे कुछ हो जाए तो इन प्रोग्रामों को मुकम्मल कर लेना सम्बंधित लोगों तक पहुंचा देना।

इस की बहन नुदरत कहती हैं कि तालेअ के साथ रहने के बाद मैंने उस की जमाअत के कामों के लिए लगन को पहचाना। दीन की ख़िदमत में व्यस्तता रहने की वजह से अक्सर देर से घर लौटते। यहां यूनीवर्सिटी में पढ़ने आई थी तो उनके पास रहती रही थी। कहती हैं कभी रात दस बजे के बाद कभी आधी रात के बाद घर आना और खाना खाना फिर काम पर लग जाना। छुट्टी के दिन भी उस के लिए हक़ीक़त में कोई छुट्टी नहीं होती थी जब तक कि जमाअत का काम ख़त्म न हो जाए। हमेशा बहुत जोश और जज़्बे से जमाअती काम में व्यस्तता रहती। फ़ारिग़ वक़्त में अक्सर डाकोमैंटरीज़ और वीडीयोज़ देखता रहता तो मैंने कभी किसी को किसी प्रोग्राम को इतनी गहराई में देखते और तजज़िया करते नहीं देखा जैसे कोई अध्यन कर रहा है और पूछने पर कहता कि अपने हुनर में नुमायां कामयाबी हासिल करने के लिए बहुत सारी दस्तावेज़ी फिल्मों और वीडीयोज़ का अध्यन करना पड़ता है। जमाअत के लिए मवाद तैयार कर के उम्दा और मयारी तारीख़ी डाकोमैंटरीज़ तैयार करने का मलिका उस के अंदर बहुत ज़्यादा था।

दीन का इलम भी बहुत वसीअ था। यदि इस्लामी तालीमात के हवाले से किसी बारीक से बारीक पहलू के विषय में मेरे ज़हन में कोई सवाल उठता तो अक्सर मेरा ध्यान उस के विषय में उनसे बात करने की तरफ़ जाता। अहादीस का गहिरा अध्यन था। कहीं न कहीं से कोई ऐसी हदीस पेश कर देता जिसको अक्सर लोग नहीं जानते थे और साथ उस का हवाला भी बता देता। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर क़ुरआन की आयात का हवाला भी दे देता। हर तरह की बात चीत पर तबसरा कर लेता। बेहस के दौरान इतने विश्वास के साथ अपने मत को वर्णन करता कि दूसरों के पास उन्हें क़बूल करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहता था। अरबी भाषा का भी अध्यन था और इस में काफ़ी गिरिफ़्त हासिल करने की उसने कोशिश की। इस की ग्रेमर से भी जानकारी थी क्योंकि वह अल्लाह तआला के कलाम को इस की असल भाषा में समझना चाहता था। मैंने इस से पूछा था कि उसने अरबी का अध्यन इतनी गहराई में कैसे किया है? तो उसने मुझे भी मुख़्तलिफ़ नुकात पर मुश्तमिल एक जामे लिस्ट भेजी और मेरी राहनुमाई की। इस फ़हरिस्त में छब्बीस अध्याय और बहुत सारे नुकात अलग थे और बहुत सारी तरकीबें भी थीं। इन समस्त ज़हनी सलाहियतों को तालेअ ने केवल ख़ुदा का क़ुरब हासिल करने और जमाअत की ख़िदमत के लिए इस्तिमाल किया। कहती हैं दो ख़्वाबें बिलख़सूस ऐसी हैं जिनके बारे में तालेअ ने मुझे सीधे बताया कि ऐसा लगता है कि इस में इस की शहादत की तरफ़ इशारा है। पहला स्वप्न तालेअ ने अपने बेटे तलाल के बारे में बात चीत करते हुए बताया कि तलाल को अपने माता पिता में से किसी एक के मरने का शदीद भय था और इस की वजह यह थी कि वह चचा क़ादिर की शहादत के बारे में जानता था। यह बात बताते वक़्त तालेअ क़दरे संजीदा हो गया और अपनी आवाज़ आहिस्ता कर ली। कहती हैं इस स्वप्न की तफ़सील मेरी याददाश्त में पूरी तरह स्पष्ट नहीं है लेकिन तालेअ कहते हैं कि इस में मजमूई पैग़ाम जो था वह यह था कि मैं अपने सुसर की तरह कुछ वाक़िया होने का दावा तो नहीं करता लेकिन मैंने यह स्वप्न देखा है जिसमें इस तरह का वर्णन था कि इस से मिलता-जुलता कोई वाक़िया होगा। तालेअ ने स्वप्न में यह देखा कि खुद्दामुल अहमदिया के कपड़े पहने हुए है और झंडा उठाए जन्नत में दाख़िल हो रहा है और हर कोई उसे अपने सुसर के नाम से पुकार रहा है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर आ गया।

दूसरा स्वप्न तालेअ के एक पैग़ाम की सूरत में मेरे पास महफ़ूज़ है। जब मैं हमल के दौरान बीमार थी और काफ़ी संजीदा हालत हो गई थी। कई दफ़ा हस्पताल में दाख़िल किया गया तो मुझे बार-बार फ़ोन करता और मेरा हाल पूछा करता और तसल्ली दिलाता। इस वक़्त उसने अपने एक स्वप्न का वर्णन किया कि इस की बहनें उस के इंतिक़ाल के बाद ज़िंदा रहेंगी और कहता है कि कुछ वर्ष पहले एक स्वप्न देखा था जहां मैं जन्नत में दाख़िल हो रहा हूँ और वहां मेरे रिश्तेदारों की तरफ़ से एक स्वागतम पार्टी का इंतिज़ाम किया गया है। मैं फ़ौत होने पर काफ़ी हैरान हूँ और परेशान हूँ कि मेरी छोटी बहनें मुझसे पहले न कहीं इंतिक़ाल कर जाएं। इसलिए मैंने इधर उधर देखा तो उनमें से किसी को वहां मौजूद नहीं पाया। उसने अपनी बहन को कहा कि यदि यह स्वप्न सच्चा है तो तुम फ़िक्र न करो। डाक्टरों ने बड़ी संजीदा सूरत-ए-हाल बताई है लेकिन फ़िक्र न करो यदि मेरी यह स्वप्न सच्चा है तो तुम ठीक हो जाओगी और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह सब कुछ ठीक भी हो गया। कहती हैं मुझे तालेअ की ज़हानत पर भी फ़ख़र है। ख़िलाफ़त से इस की मुहब्बत भी अतुल्य थी।

उनकी छोटी बहन कहती हैं कि बेहतरीन रोल मॉडल थे। मुझे उनसे कई बातें सीखने का अवसर मिला। कहती है जब मैं तेराह चौदह वर्ष की थी तो एक दिन उनके घर में तालेअ ने चाहा कि वह मुझे पसंदीदा सूरत पढ़के सुनाए। इसलिए उसने मुझे सूरत यूसुफ़ की तिलावत सुनाई जो कि निहायत उम्दा लहजे और बहुत ख़ुश-अल्हानी से की थी। यह भी कहता था कि ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला का दर्सुल क़ुरआन सुनता रहता हूँ। दफ़्तर आते-जाते यह दरस सुनता रहता था। कहती हैं कि एक दफ़ा मैंने उसे कोई लतीफ़ा सुनाया जिसमें ईसाइयत का वर्णन था और मज़हब की वजह से कुछ थोड़ा ईसाई मज़हब का उपहास किया गया था तो उसने मुझे कहा कि हमें किसी मज़हब का मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिए। इस तरह लोग भी हमारे ख़िलाफ़ बोलेंगे।

आबिद वहीद मर्कज़ी प्रैस सैक्रेटरी उनके रिश्तेदार भी हैं। इस के मामूं, वह कहते हैं कि तालेअ के साथ मेरा रिश्ता विशेष था। केवल एक रिश्ता ही नहीं था बल्कि

बहुत सारे रिश्तों पर मुश्तमिल रिश्ता था। मामूं भी इस का मैं लगता था लेकिन हमारे मध्य उमर का ज़्यादा अंतर नहीं था। वह मेरे लिए एक छोटे भाई और दोस्त की तरह था। केवल सात वर्ष का फ़र्क़ था। कहते हैं मैंने हमेशा तालेअ में यह बात महसूस की और मुशाहिदा भी किया कि उसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान से बेपनाह मुहब्बत थी। लेकिन यदि ख़ानदान के अंदर से किसी ने कभी कोई ग़लत काम किया होता तो बहुत ज़्यादा दर्द और ग़म महसूस करता था क्योंकि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़-ए-वक़्त को बदनाम करने वाली बात होती है। मुहब्बत तो थी लेकिन यह नहीं कि इन लोगों से अंधी मुहब्बत है। फिर दुख-दर्द भी होता था और बर्दाश्त नहीं होता था कि कोई ख़ानदान वाला ऐसी हरकत करे जिससे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम, ख़ानदान का नाम और ख़लीफ़-ए-वक़्त का नाम बदनाम हो। कहते हैं कि अक्सर मेरे साथ इस तरह के मसायल पर बात चीत करता और इस की आवाज़ में हिमेश दर्द वाज़िह होता था। यदि उसे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान का एक रुकन होने पर गर्व था लेकिन यह एज़ाज़ उस के लिए ऐसा नहीं था कि दूसरों के सामने ऐलान करता फिरे या इस से कोई अनूचित फ़ायदा उठाने की कोशिश करे और बहुत सारे लोग इस को इस हवाले से जानते भी नहीं थे। एम.टी.ए न्यूज़ में काम करने के चंद महीनों बाद कहते हैं तालेअ मेरे पास आया और कहता है कि मुझे लगता है कि एम.टी. ए न्यूज़ को एम.टी. ए में बहुत मामूली सा सैक्शन समझा जाता है और एम.टी.ए में लोग खुले आम या अपने रवैय्ये के माध्यम से इस बात का प्रकटन करते हैं कि एम.टी.ए न्यूज़ एम.टी.ए का सबसे कमज़ोर विभाग है लेकिन तालेअ ने इस कमज़ोरी को अपना मिशन बना लिया और पूर्ण विश्वास से कहता था कि इंशा अल्लाह जब काम मुकम्मल हो जाएगा तो लोग एम.टी. ए न्यूज़ को बहुत दिलचस्पी से देखा करेंगे और कहेंगे कि एम.टी. ए में बेहतरीन प्रोग्राम एम.टी. ए न्यूज़ वाला है। यह मेरा चैलेंज है और मैंने उसे क़बूल कर लिया है। इस के बाद तालेअ ने कुछ दस्तावेज़ी फिल्में बनाएँ और फिर और प्रोग्राम शुरू किए और कहते हैं दस्तावेज़ी फिल्मों की तैयारी के दौरान अक्सर मैंने देखा है कि अठारह या उन्नीस घंटे काम करता।

वर्तमान अफ़्रीक़ा का जो दौरा था वह बुनियादी तौर पर इस वजह से था कि मैंने उसे हिदायत की थी और इस के पेश-ए-नज़र वही था कि विभाग न्यूज़ जो है नुसरत जहां स्कीम के बारे में अफ़्रीक़ा जा कर एक दस्तावेज़ी फ़िल्म बनाए। प्रोग्राम के अनुसार पहले घाना जाना था, फिर सीरालियून और फिर गेम्बया। फिर यह भी इस की ख़ातिर तैयार हो के गया था कि नुसरत जहां के ऊपर डाकोमैंटरी बनाएगा। अफ़्रीक़ा जाने से पहले तालेअ ने पूरे एहतिमाम के साथ हर चीज़ की तैयारी की। तफ़सीली सफरनामा तैयार किया और मुकम्मल शेड्यूल बना के रोज़ाना का प्रोग्राम तैयार किया ताकि कोई वक़्त ज़ाए न हो। हक़ीक़त में उसने बहुत संजीदगी के साथ यह तैयारी की थी। कहते हैं कि अक्सर तालेअ की राय में और मेरी राय में इख़तिलाफ़ हो जाता था और मैं ने जब भी इस से बेहस शुरू करता तो चंद मिनट के बाद में हार मान लेता क्योंकि मैं जानता था कि जब तक मैं इस की बात पर यक़ीन न कर लूं वह बेहस जारी रखेगा, दलीलें देता रहेगा। जबकि कहते हैं एक बात मैंने इस में देखी है कि यदि यह कह दिया जाए कि ख़लीफ़-ए-वक़्त की राय यह है तो वह कहता था कि यदि हुज़ूर की राय मेरी राय से थोड़ी सी भी मुख़्तलिफ़ है तो मैं पूरे दिल से क़बूल करूँगा कि मैं बिल्कुल ग़लत हूँ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पर यह डाकोमैंटरी बना रहा था तो उस की कज़न जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की पड़पोती लगती है ने उसे कहा कि अब्बाजान वाली डाकोमैंटरी भी बहुत अच्छी बनाना, रोज़ रोज़ नहीं बनती, तो उसने कहा कि मेरा नहीं ख़्याल कि इतनी अच्छी होगी क्योंकि वह सीधे ख़लीफ़ा के बारे में नहीं है लेकिन अल्लाह करे लोगों को पसंद आ जाए। तो यह था उस का ख़िलाफ़त से सम्बन्ध।

मिर्ज़ा तलहा अहमद ने भी लिखा है कि चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पर भी एक डाकोमैंटरी बनाने का इरादा कर रहा था जिसके लिए उसने मुझे भी कुछ काम दिया था और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बहुत अच्छी डाकोमैंटरी बनाया करता था। इस को स्क्रिप्ट और story telling में महारत हासिल थी। adam walker साहिब लिखते हैं (ग़ालिबन आदम वॉकर साहिब ही हैं)कि तालेअ को मैं बचपन से जानता हूँ। हमने इकट्ठे खुद्दामुल अहमदिया में और फिर बाद में मर्कज़ी प्रैस ऑफ़िस और एम.टी ए में काम किया है। एम.टी ए से सम्बंधित कामों में विशेषता मैंने यह बात नोट की कि तालेअ हमेशा निहायत बारीकबीनी से काम का जायज़ा लिया करता था। बहुत गहराई में जा कर मामलात देखता था। यदि उस के ज़हन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ या ख़लीफ़ा वक़्त के इर्शादात और हिदायात को लोगों तक पहुंचाने के बारे में कोई ख़्याल पैदा होता था तो बिना झिजक मुझसे बात करता और अपने ख़्यालात का प्रकटन करता। इस बारे में सोचता कि मुख़्तलिफ़ ऑनलाइन ज़राए से पैग़ाम को किस तरह लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। इस बात से पता चलता है कि आपकी हिदायात को गहराई में जा कर समझता था और फिर इस पर अमल करने की कोशिश भी करता था। हमेशा सच्च बोलने को तर्जीह देता था। यदि कोई मश्वरा देना होता या अपनी राय का प्रकटन करना होता तो हमेशा सच्चाई के साथ बात वर्णन करता। शब्दों में कभी मिलावट नहीं होती थी। दूसरे कारकुनान के साथ काम करते हुए भी उन्हें हमेशा सच्चा फीडबैक देता।

नसीम बाजवा साहिब लिखते हैं कि 2001ई. से 2009 ई. तक ब्रैडफोर्ड में बतौर मुबल्लिग़ चयन था। इस दौरान हार्टले पोल जमाअत में भी जाया करता था। कहते हैं मैंने बतौर तिफ़्ल उसे निहायत शौक़ से प्रोग्रामों में संलग्न होते देखा है। वक़्त का पाबंद, संजीदा, ज़हीन, दीनी मालूमात को बढ़ाने का शौक़ रखने वाला, नमाज़ों को ठहर ठहर कर अदा करने वाला, फ़रमांबर्दार, मेहमान नवाज़, बड़ों का एहतिराम करने वाला, ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुहब्बत करने वाला और उनकी बातों को शौक़ से सुनने वाला, ज़िम्मेदारियों को अहसन रंग में अदा करने वाला, ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने वाला, ज़िक्र-ए-इलाही करने वाला, तब्लीग़ के कामों को शौक़ से करने वाला, क़ुरआन-ए-करीम को ख़ूबसूरती से पढ़ने वाला बच्चा था। बाद में नौजवानी में खूबियां और भी निखर कर सामने आईं।

इस की एक कज़न हैं मुबारका रहमान। वह कहती हैं कि तालेअ की एक ख़ूबी जो मैंने हमेशा महसूस की वह उस की वक़्फ़ ज़िंदगी की हैसियत से क़नाअत और सादगी थी। बहुत दफ़ा ख़ुदा के अपने ऊपर फ़ज़लों को गिनवाता था। कभी इस में दुनिया की किसी किस्म की लालच नहीं देखी बल्कि जब उस के सामने दुनिया-दारी की बात होती तो अपने विशेष अंदाज़ में हँसता और शुक्र करता था कि वक़्फ़ होने की वजह से ख़ुदा ने इस को इन सब मामलात से बेपर्वा कर दिया है और इस की हर ज़रूरत को ख़ुदा ने ख़ुद ही पूरा कर दिया है। हक़ीक़ी वक़्फ़ ज़िंदगी था।

फिर उनके एक दोस्त और मुरब्बी नौशेरवाँ रशीद हैं: मुझे पिछले तीन वर्ष से तालेअ भाई के साथ एम.टी. ए न्यूज़ में काम करने का अवसर मिला। तीन वर्ष के अरसा में तालेअ न केवल मेरे कलीग (colleague) थे बल्कि उस्ताद भी थे और इस से बढ़कर दोस्त और भाई थे। कहते हैं मैंने तीन वर्ष के अरसा में तालेअ को बाक़ायदगी से गुरूवार का रोज़ा रखते हुए देखा। अपनी पाँचों नमाज़ों का बहुत ख़्याल रखते हुए देखा। वक़्त से पहले मस्जिद जाते और इस बात को भी मैंने देखा कि चंदाजात की वक़्त से पहले अदायगी किया करते थे।

बहरहाल वाक़ियात तो बहुत से ऐसे हैं और बहुत लोगों ने लिखा है लेकिन वक़्त की रियाइत से कुछ मैंने वर्णन कर दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जिस्मानी और रुहानी ऑल होने का हक़ भी उसने अदा कर दिया और उस को भी अल्लाह तआला ने ऐसा लिया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऑल में से था तो मुहर्रम के महीना में इस को भी क़ुर्बानी के लिए चुना। एक हीरा वाक़िफ़ ज़िंदगी था जैसा कि मैंने कहा। अल्लाह तआला उसके दर्जात बुलंद से बलंद तर करता चला जाए। आशा है कि अल्लाह तआला ने उसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में जगह दी होगी बल्कि किसी ने इस की वफ़ात के बाद स्वप्न भी देखी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जगह खड़े हैं और तालेअ दौड़ता हुआ जा कर उनसे चिमट जाता है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपने साथ उसे चिमटा कर कहते हैं कि आओ मेरे बेटे, स्वागतम।

अत: क्या ही ख़ुश-क़िस्मत हैं वह जो दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी कर के इस स्थान को पा लेते हैं। अल्लाह तआला उस के बीवी बच्चों का भी हाफ़िज़-ओ-नासिर हो और उन्हें सब्र और हौसला दे। इस के माँ बाप और बहन भाईयों को भी सब्र और हौसला दे और इस के बहन भाईयों में भी, इस की औलाद में भी इस की नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह आज उस का जनाज़ा भी होगा। जनाज़ा आ है।

&*&*&*&

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 5 October 2021 Issue No.35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जमाअत अहमदिया की मर्कज़ी वेबसाइट www.alislam.org के टीम मैंबरान की अमीर-ऊल-मौमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

हज़रत अमीर-ऊल-मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह शफ़क़त तिथि 21 नवंबर 2020 ई. को जमाअत अहमदिया की मर्कज़ी वेबसाइट www.alislam.org की टीम को ऑनलाइन मुलाक़ात का अवसर अता फ़रमाया।

इस मुलाक़ात का उद्देश्य वेबसाइट से मुताल्लिक़ा प्रोजेक्ट्स के सिलसिला में हुज़ूर अनवर से रहनुमाई हासिल करना और दुआओं का हुसूल था। मुलाक़ात के लिए अमरीका और कैनेडा से तशरीफ़ लाने वाले रज़ाकार इन मस्जिद बेतुल रहमान, सिलवर स्प्रिंग, मेरीलैंड, अमरीका में जमा हुए। एम.टी.ए. लंदन और अमरीका की टीम ने अपने जदीद आलात के माध्यम बेहतरीन आडीयो और वीडीयो का सम्पर्क क़ायम किया।

मुलाक़ात का आरंभ अमरीका के वक़्त के अनुसार सुबह सवा सात बजे तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ, जिसके बाद टीम के मैंबरान ने क़ुरआन-ए-करीम के एक नए सर्च इंजन के प्राजैक्ट के बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अपनी presentations पेश कीं। इस नई वेबसाइट से क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और इस की आयात को तलाश इत्यादि करने में सहूलत पैदागी। टीम ने हुज़ूर अनवर से कुछ गहरे इलमी विषयों के बारे में भी रहनुमाई हासिल की। हुज़ूर-ए-अनवर ने दुआ दी कि अल्लाह करे कि यह वेबसाइट संसार के समस्त मुस्लमानों और ग़ैर मुस्लिम अफ़राद के लिए हिदायत और रोशनी का कारण हो (आमीन)

दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में अल् इस्लाम वेबसाइट में की जाने वाली प्रस्तावित बढ़ोतरी की रिपोर्ट भी पेश की गई उदाहरणता सहाबा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुताल्लिक़ा एक नया सैक्शन जिसमें बदरी साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत पर आधारित हुज़ूर अनवर के ख़ुतबात से माख़ूज़ हर सहाबी के सम्बन्ध में एक पृष्ठ शामिल किया जा रहा है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में The khalifa नाम की एक नई मोबाइल एप का परिचय पेश किया गया जिस पर अभी काम जारी है। इस में ख़लीफ़तुल मसीह से मुताल्लिक़ा ताज़ा-तरीन मालूमात, लेख, वीडीयोज़ और तस्वीरें देखी जा सकेंगी।

हुज़ूर अनवर ने अल् इस्लाम वेबसाइट पर होने वाली तबदीलीयों के बारे में कुछ विषय दरयाफ़त फ़रमाए और इस के इस्तिमाल को आसान बनाने के लिए सर्च इंजन को मज़ीद बेहतर बनाने के सम्बन्ध में रहनुमाई अता फ़रमाया। मुलाक़ात के बाद हुज़ूर अनवर ने अज़राए-शफ़क़त अल्-इस्लाम टीम के काम पर प्रसन्नता का इज़हार फ़रमाया और दुआओं का ख़ूबसूरत तोहफ़ा इन शब्दों में अपने पवित्र क़लम से तहरीर फ़रमाया :

"mashaallah al-islam team is doing a marvellous job. allah taala bless you and increase your wisdom and knowledge. amin"

"माशा अल्लाह अल्-इस्लाम टीम बहुत अच्छा काम कर रही है। अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल फ़रमाए और आपके इलम-ओ-मार्फ़त में बरकत अता फ़रमाए। आमीन।"

दुआ है कि अल्लाह तआला अल्-इस्लाम टीम को एक नए अज़म और वलवले से समस्त कामों को प्यारे हुज़ूर के इर्शादात की रोशनी में करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(रिपोर्ट संकलन कर्ता : मसऊद नासिर, कैनेडा)

(ध्यन्वाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 27 नवंबर 2020)

पृष्ठ 1 का शेष

जज़ब की क़ुव्वत लेकर निकलती है वह दूसरे को जज़ब करती है। इस जज़ब में इतनी शक्ति होती है कि दुनिया और जो कुछ इस में है की सारी बातें इस में भस्म हो जाती हैं और वह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और फ़ैज़ को अपनी तरफ़ खींचने लगती है और इसी सिलसिला को बाक़ी समस्त सिलसिलों पर प्राथमिकता और फ़ौक़ हो जाती है। लेकिन इस के लिए सहीह कोशिश की ज़रूरत है। इस के बिना यह मार्ग नहीं खुलता। जैसा कि फ़रमाया है

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 328 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

रवीफ़ा बिन साबित अंसारी रिवायत करते हैं

سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ يَوْمَ حُنَيْنٍ قَالَ لَا يَحِلُّ لِامْرِءٍ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَسْقِيَ مَاءَهُ زَرْعَ غَيْرِهِ۔ يَعْنِي إِتْيَانَ الْحَبَالَى۔ وَلَا يَحِلُّ لِامْرِءٍ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَقَعَ عَلَى امْرَأَةٍ مِنَ السَّبْيِ حَتَّى يَسْتَبْرِئَهَا وَلَا يَحِلُّ لِامْرِءٍ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَبِيعَ مَغْنَمًا حَتَّى يُقْسَمَ۔ (سنن ابی داؤد، کتاب النکاح، باب فِي وَطْءِ السَّبَايَا)

मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को हुनैन के दिन फ़रमाते हुए सुना कि जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उस के लिए जायज़ नहीं कि वे अपना पानी किसी और की खेती में लगाए। अर्थात गर्भवती महिलाों से विवाह के पश्चात् वाले सम्बन्ध क़ायम करे। और जो व्यक्ति अल्लाह और यौम आख़िरत पर ईमान रखता है उस के लिए जायज़ नहीं कि क़ैदी महिलाओं से वह शारीरिक सम्बन्ध कायम करे जब तक कि गर्भ के खली होने का विश्वास न हो जाए और जो व्यक्ति अल्लाह और यौम आख़िरत पर ईमान रखता है उस के लिए जायज़ नहीं कि वह माल-ए-ग़नीमत को तक़सीम से पहले फ़रोख़त करे।

अत: उसूली बात यही है कि इस्लाम इन्सानों को लौंडियां और ग़ुलाम बनाने के हक़ में कदापि नहीं है। इस्लाम के आरंभिक समय में, उस समय के विशेष हालात में मजबूरन इस की वक़्ती आज्ञा दी गई थी लेकिन इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी हिक्मत के साथ उनको भी आज़ाद करने की तरग़ीब दी और जब तक वे स्वयं आज़ादी हासिल नहीं कर लेते थे या उन्हें आज़ाद नहीं कर दिया जाता था, उन से अच्छाई और दया के व्यवहार की ही ताकीद फ़रमाई गई।

और जैसे ही यह विशेष हालात ख़त्म हो गए और रियास्ती कानून ने नई शक्ल इख़तियार कर ली जैसा कि अब प्रचलति है तो इसके साथ ही लौंडियां और ग़ुलाम बनाने का जवाज़ भी ख़त्म हो गया। अब इस्लामी शरीयत के अनुसार लौंडी या ग़ुलाम रखने का नितांत कोई जवाज़ नहीं है। बल्कि हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अब मौजूदा हालात में इस को हराम क़रार दिया है।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad